डाक पंजीयन क्रमांक 317/2019-21

हिन्दी साप्ताहिक

RNI: MPHIN/2012/48965

विक्रांत भैरव दर्शन

वर्ष 08 अंक 8 | उज्जैन, शुक्रवार 26 जुलाई से 1 अगस्त 2019 | पृष्ठ 8, मूल्य 1 रुपया

2 » सारी परिसीमाओं और सदहदों से स्वतंत्र हैं, भगवान

4 » कथक के विलक्षण प्रयोक्ता और विशिष्ट विद्वान

6 » अस्वीकार होने से आप और मजबूत बनते हैं-दिशापाटनी

लाल जी टंडन म.प्र. के नए राज्यपाल

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने शनिवार को चार राज्यों में नए राज्यपाल नियुक्त किए। बिहार के राज्यपाल लालजी टंडन को मध्यप्रदेश का और म.प्र. की मौजूदा राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को उ.प्र. का राज्यपाल नियुक्त किया गया। लालजी टंडन का जन्म 12 अप्रैल 1935 को हुआ। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के 2009 में राजनीति से सन्यास लेने के बाद वे लखनऊ से 2009 में लोकसभा सांसद चुने गए थे। उत्तर प्रदेश की राजनीति में सक्रिय रहने वाले टंडन प्रदेश की भाजपा सरकारों में मंत्री भी रहे हैं। टंडन का राजनीतिक सफर साल 1960 में शुरू हुआ था। मायावती और कल्याण सिंह की कैबिनेट में वह नगर विकास मंत्री रहे। कुछ वर्षों तक वह नेता प्रतिपक्ष भी रहे।

राजनीतिक रूप से संवदेनशील पश्चिम बंगाल में सुप्रीम कोर्ट के वकील व पूर्व सांसद जगदीप धनखड़ को राज्यपाल बनाया गया है। रमेश बैस को त्रिपुरा का राज्यपाल बनाया गया है। अगस्त 2018 में कप्तान सिंह सोलंकी त्रिपुरा के राज्यपाल थे। गुप्तचर ब्यूरो के पूर्व विशेष निदेशक एन.रवि को नागालैंड का राज्यपाल बनाया गया हैं। वे 1976 बैच के आईपीएस रहे।

तैरते होटलों पर विचार कर सकता है तोक्यो

योकोहामा। अगले साल होने वाले ओलंपिक खेलों के दौरान तोक्यो में होटलों की कमी पड़ सकती है जिसके मद्देनजर क्रूस जहाजों को पानी पर तैरते होटलों में बदला जा सकता है। ओलपिंक को देखते हुए जबर्दस्त निर्माण कार्य के बावजूद तोक्यो में 14000 कमरे कम पड़ सकते हैं।

स्थानीय अधिकारियों का कहना है कि बड़े-बड़े जहाजों को अस्थायी रूप से होटलों में बदला जा सकता है।

जापान की सबसे बड़ी ट्रैवल एजंसी जेटीबी ने ओलपिंक के दौरान 1011 केबिन का सन प्रिंसेस जहाज बुक कर रखा है, जिसमें जकुजी से लेकर थिएटर तक सब कुछ है। एजंसी ओलपिंक स्पर्धाओं के टिकटों के साथ पैकेज का प्रस्ताव दे रही है लेकिन ये सस्ते नहीं हैं। बालकनी के साथ कमरे का दो रात का किराया 1850 डॉलर है।

सही रास्ते पर बढ़ रहा चंद्रयान-2

बाहुबली के कंधों पर सवार होकर चांद की ओर कूच करने वाले चंद्रयान-2 की सेहत दुरुस्त है और यह बिलकुल सही रास्ते पर बढ़ रहा है। देश के दूसरे चंद्र अभियान की रवानगी के दूसरे दिन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। सोमवार को दोपहर 2:43 बजे आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से इसरो के सबसे बड़े रॉकेट जियोसिंक्रोनस सेटेलाइट लॉन्च व्हीकल-मार्क 3 (जीएसएलवी-एमके3) ने चंद्रयान-2 को लेकर उड़ान भरी थी। उड़ान के 16 मिनट 23 सेकंड बाद रॉकेट ने यान को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित कर दिया था।

इसरो के बेंगलुरु स्थित मुख्यालय के एक अधिकारी ने बताया, 'यान की सेहत दुरुस्त है। अभियान के बारे में कोई आधिकारिक अपडेट नहीं जारी किया गया है, क्योंकि अभी इसकी जरूरत नहीं है। कुछ छोटे पड़ाव हैं, जिनके बारे में सही वक्त आने पर जानकारी दी जाएगी। चंद्रयान-2 के तीन हिस्से हैं- ऑर्बिटर, लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान। ऑर्बिटर सालभर चांद की परिक्रमा करते हुए प्रयोगों को अंजाम देगा। वहीं लैंडर और रोवर चांद की सतह पर उतरकर प्रयोग करेंगे। सात सितंबर को चांद पर लैंडररोवर की लैंडिंग के साथ ही भारत यह उपलब्धि हासिल करने वाला चौथा देश बन जाएगा। अब तक अमेरिका, रूस और चीन ने ही चांद पर अपना यान उतारा है।

2008 में भारत ने चंद्रयान-1 भेजा था। यह ऑर्बिटर मिशन था, जिसने 10 महीने तक चांद की परिक्रमा करते हुए प्रयोगों को अंजाम दिया था। चांद पर पानी की खोज का श्रेय इसी अभियान को प्राप्त है। चंद्रयान-2 इसी खोज को आगे बढ़ाते हुए वहां पानी और अन्य खनिजों के प्रमाण जुटाएगा।

चंद्रयान-2 इसलिए भी खास है, क्योंकि इसके लैंडर-रोवर चांद के दक्षिणी ध्रुव के जिस हिस्से पर उतरेंगे, अब तक वहां किसी देश का यान नहीं उतरा है। चांद के इस हिस्से पर पृथ्वी और हमारे सौरमंडल के विकासक्रम से जुड़े कई राज छिपे होने की उम्मीद है।

उज्जैन की मेधावी बेटी अपर्णा शर्मा ने अमरीका की केलिफोर्निया पब्लिक यूनिवर्सिटी से अर्जित की पी-एच.डी.

उज्जैन में पली-बढ़ी अपर्णा शर्मा को अमेरिका की प्रतिष्ठित केलिफोर्निया पब्लिक यूनिवर्सिटी द्वारा पी-एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई है। यह उपाधि उन्हें 'फ्यूचर ऑफ वर्क एन्ड प्लेस-2025' विषय पर उनके शोध प्रबन्ध पर दी गई है। अपर्णा शर्मा ने सा.विक्रान्त भैरव दर्शन को बतलाया है कि उन्होंने अपना शोध कार्य चार वर्ष के अथक परिश्रम से सम्पन्न किया। उन्हें विगत 28 जून 2019 को अमेरिका में पी-एच.डी. उपाधि से सम्मानित किया गया। अपर्णा शर्मा ने उज्जैन में सेंट मेरी कान्वेन्ट स्कूल में शिक्षार्जन किया था। तब वे उज्जैन में अपनी भुआ के घर महाकाल मन्दिर के पास रहती थीं। उनकी भुआ जी डॉ. मोहिनी डी. व्यास उज्जैन की प्रतिष्ठित चिकित्सक थीं। डॉ. अपर्णा शर्मा ने अपनी भुआजी की स्मृति में मेघावी छात्राओं के लिए उड़ान स्कॉलरशिप स्थापित की है। सेंट मेरी कान्वेंट स्कूल में कक्षा 10 की करीब 15 छात्राओं को उड़ान स्कॉलरशिप विगत वर्षों में दी गई है। अब यह छात्रवृत्ति फूलपुर, उ.प्र. के संस्कार पब्लिक स्कूल की मेघावी छात्राओं को प्रदान की जा रही है।

कृ. पृष्ठ 3 भी देखिए

दिल्ली की कायापलट करने वाली शिल्पकार का थम गया सफर

नई दिल्ली। कांग्रेस की दिग्गज नेता और दिल्ली की तीन बार मुख्यमंत्री रहीं शीला दीक्षित के शनिवार को दिल का दौरा पड़ने से निधन की खबर फैली तो पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गई। कहा जाता है कि शीला आधुनिक दिल्ली की शिल्पकार थीं और जब भी दिल्ली के विकास की बात होगी उनका नाम सबसे पहले लिया जायेगा। उन्हीं के प्रयासों से दिल्ली परिवहन निगम सीएनजी ईंधन पर आया और बिजली व्यवस्था को ठीक किया। उन्होंने मेट्रो का परिचालन शुरू कराया। जाम से निजात के लिए कई बड़े फ्लाइओवर का काम उन्हीं के कार्यकाल में पूरा हुआ। दिल्ली में कॉमनवेल्थ गेम्स का सफल आयोजन किया गया। अब वे हमारे बीच नहीं हैं लेकिन दिल्ली को प्रगति उनकी याद दिलाती रहेगी।

शीला दीक्षित का जन्म 31 मार्च 1938 को पंजाब के कपूरथला में गैर राजनीतिक परिवार में हुआ था। उन्होंने स्कूली शिक्षा के बाद दिल्ली यूनिवर्सिटी के मिरांडा हाउस कॉलेज से स्नातक के बाद इतिहास में मास्टर्स की डिग्री प्राप्त की थी। राजनीति की दुनिया के करीब वे उस वक्त आईं जब उनकी शादी आइ.ए.एस अधिकारी विनोद दीक्षित से हुई, जिनके पिता उमाशंकर दीक्षित पूर्व केंद्रीय मंत्री के साथ राज्यपाल रहे थे। शीला दीक्षित ने राजनीति का गुर अपने ससुर से ही सीखा था जो कांग्रेस के दिग्गज नेता होने के साथ इंदिरा गांधी के करीबी थे। 1970 के दशक में वे युवा महिला मोर्चा की अध्यक्ष बनीं। 1984 से1989 तक उ.प्र के कन्नौज से लोकसभा सदस्य रहीं। 1984 से 1989 तक संयुक्त राष्ट्र आयोग में भारत का नेतृत्व किया। 1986 से1989 के दौरान केंद्रीय मंत्री के रूप में काम किया। 1998 में दिल्ली की मुख्यमंत्री बनीं और 2013 तक लगातार 15 साल तक पद पर बनी रहीं। 1998 से 2003 में वे गोलमार्केट विधानसभा सीट से चुनी गईं। 2008 में वे नई दिल्ली से विधानसभा के लिए चुनी गईं। 2015 में आम आदमी पार्टी के हाथों दिल्ली में हार का सामना करना पड़ा। 2014 में केरल की राज्यपाल बनीं पर कुछ महीनों बाद इस्तीफा दे दिया।

नहीं रहे सांसद ए.के. रॉय

धनबाद। पूर्व लोकसभा सांसद और मार्क्सवादी समन्वय समिति (एमसीसी) के संस्थापक ए.के.रॉय का रविवार को निधन हो। गया। रॉय 90 वर्ष के थे और अविवाहित थे। रॉय को उनके साथी और समर्थक 'राजनीतिक संत' कहते थे क्योंकि अंतिम सांस लेने तक उनका बैंक खाता 'शून्य बैलेंस' ही दिखाता रहा। वह झारखंड आंदोलन के संस्थापकों में से एक थे। धनबाद से तीन बार के सांसद रॉय झारखंड की क्षेत्रीय पार्टी मार्क्सवादी समन्वय समिति के । संस्थापक भी थे। रॉय 1977, 1980 और 1989 में धनबाद लोकसभा सीट से जीते। इसके अलावा उन्होंने बिहार विधानसभा में 1967, 1969 और 1972 में सिंदरी सीट का प्रतिनिधित्व किया। झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) सुप्रीमो शिबू सोरेन और पूर्व सांसद दिवंगत बिनोद बिहारी महतो के साथ रॉय ने 1971 में बिहार से अलग राज्य की मांग को लेकर झारखंड आंदोलन शुरू किया। झारखंड 15 नवंबर 2000 को अलग राज्य बन गया। रॉय का जन्म सपुरा गांव में हुआ था, जो अब बांग्लादेश में है। उनके पिता शिवेंद्र चंद्रा रॉय वकील थे। उन्होंने 1959 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से रसायन शास्त्र में एम.एस.सी की और दो साल तक एक निजी कंपनी में काम किया। बाद में वह 1961 में पीडीआइएल सिंदरी में शामिल हो गए।

'द ग्रेजुअट शो'-8 छात्र प्रस्तुतियां

नई दिल्ली। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के आठ दिवसीय नाट्य समारोह 'द ग्रेजुअट शो' की शुरूआत 22 जुलाई को हुई। शुरूआती शाम में हरिशंकर रवि द्वारा निर्देशित 80 मिनिट के नाटक 'ख्वाहिश गली' का मंचन किया गया। दूसरी शाम 23 जुलाई को एक घण्टे की अवधि में 'रइंस इन रिवर्स' की नाट्य प्रस्तुति हुई, जिसका निर्देशन सार्थक नरूला ने किया था। पी. मेलोड डोरकस के निर्देशन में 'बिहाइंड द बॉडर्स' का मंचन 24 जुलाई को हुआ। मार्येगबम सुनील सिंह द्वारा निर्देशित नाटक 'अशांति निवास' ने 25 जुलाई की शाम दर्शकों को मनोरंजन किया। समारोह की आठों प्रस्तुतियां रा.ना. विद्यालय के छात्रों की हैं। 'द ग्रेजुअट शो' 29 जुलाई तक चलेगा। 26 जुलाई को 'तूतुकड़ी मसेकर' नाटक का मंचन होगा, 27 जुलाई की शाम नाटक 'नीलकंठ पक्षी' की खोज में अभिनीत किया जाएगा। 'ए केस ऑफ क्लेयरवॉयेंस या एग्जीक्यूटिंग मिस' का मंचन 28 जुलाई को होगा समारोह की आखिरी शाम 29 जुलाई को सरस कुमार नागदेव द्वारा परिकल्पित और निर्देशित 'इनफाई नाइट वॉक' के मंचन के साथ नाट्य समारोह का समापन होगा।

बुकर पुरस्कार की निर्णायक समिती में शामिल किए गए हैं, जीत थाइल C

कवि और उपन्यासकार जीत थाइल ऐसे एकमात्र भारतीय हैं, जिन्हें 'अन्तरराष्ट्रीय बुकर प्राईज 2020' की 5 सदस्यीय निर्णायक समिती में शामिल किया गया है। 13 अक्टूबर 1959 को जन्मे जीत थाइल ने फाइन आर्ट्स में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। उनके पिता पद्म भूषण टी. जे. एस.जार्ज भी लेखक थे। जीत थाइल कवि,उपन्यासकार होने के साथ-साथ अच्छे गिटारिस्ट और गायक भी हैं। उन्होंने अपने कैरियअर के शुरूआती 23 साल पत्रकार के तौर पर मुंबई, बेंगलुरु ,हांगकांग और न्यूयॉर्क में बिताए। 2002 में लिवर का रोग हेपेटाइटिस होने के बाद उन्हें न्यूयॉर्क छोड़ना पड़ा। जीत के अनुसार हेपेटाइटिस होने के बाद उनकी जिंदगी ने नई करवट ली। इसके पहले वह पब में बैठे शराब पीते रहते, दुनिया भर के लेखकों और उनके लेखन के बारे में बात करते रहते, लेकिन खुद बहुत नहीं लिखते थे। 2007 में उनकी पत्नी शक्ति भट्ट की मौत हो गई थी। इन घटनाओं ने उन्हें अंदर से बदल दिया। जीत के अनुसार बीमारी के बाद से उन्होंने नियमित लिखना शुरू किया। जीत का किताबों से पहला परिचय भी पिता के कारण हुआ। उन्होंने पिता के बुकशेल्फ से उठाकर पहली किताब 'डायलन थॉमस' की कविताएं पढ़ी थी। जीत खुद को धीमा लेखक कहते हैं। इसमें थोड़ा लेखन ,तो बहुत संपादन शामिल होता है। वह कहते हैं - 'आपने पहली बार जो लिखा है, अगर वह बहुत अच्छा है, तो आप भाग्यशाली है। वरना तो कई कई बार लिखने पर भी अच्छा नहीं लिख पाते ।' अपनी पत्नी से दूरी का दर्द उनकी कविताओं में व्यक्त हुआ है उनकी किताब 'दीज एरर्स आर करेक्ट' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनकी किताब नार्कोपोलिस मैन बुकर पुरस्कार के लिए नामित हुई थी।

सारी परिसीमाओं और सदहदों से स्वतंत्र हैं, भगवान

–मनोज कुमार श्रीवास्तव

प्रज्ञापारमिता सूत्र की शुरुआत में ही बुद्ध कहते हैं कि महायान पर्याय है अप्रमेयता (immeasurability) का, जो पर्याय है अनंत का (विष्णु का एक नाम अनन्तशीर्ष/अनंत भी है) जिसका पर्याय है उत्सवीयता (ineffability)। इस सूत्र के अनुवाद में आगे चलकर कहा गया है -Omniscience cannot be grasped. By its very allness, it is precluded from possessing any particular mark, sign or limit which the mind might cognize or even attempt to cognize. If total awakenness manifested a sign by which it could be defined, discriminated and separately encountered, it would not be total.....The omniscience or total awakenness of Buddhahood can simply not be located or formulated ....Rather than infinity of number or infinity of e&tension in space and time, this transparent depth of unthinkability is the true and perfect infinitude. 37 उसी अधार्यता (Inconceivability) की ओर संकेत करते हैं। लेकिन परिमा या परिमाण के अंतहीन होने के सवाल को वैज्ञानिक चुनौतियां भी मिली हैं। ऐन रेंड ने अपनी पुस्तक इंट्रोडक्शन टू ऑब्जेक्टिविस्ट एपिस्टेमोलोजी में किसी अपरिमेय सत्ता के होने के सवाल को ही चुनौती दी है। उनके तर्क इस प्रकार क्रमबद्ध किए जा सकते है. (1) प्रत्येक चीज़ जिसका अस्तित्व है, उसका अस्तित्व किसी के संबंध में ही है।, (2) इस विशिष्ट सं यं 6 की पहचान (Identification) और मात्रांकन (quantification) ही माप (measurement) है।, (3) प्रत्येक अस्तित्ववान का ऐसा कोई रिश्ता या रिश्ते होते हैं जिन्हें मापा जा सकता है।, (4) मापयोग्य संबंध तब भी होते हैं जब माप की कोई विशिष्ट पद्धति या मानक उस मामले में तब तक विद्यमान भी नहीं हो, आविष्कृत भी नहीं हो और एकदम ठीक प्रिसीजन का स्तर उसमें उपलब्ध भी नहीं किया जा सका हो। अतः अप्रमेय होने का अर्थ है कि वस्तुतः आपके किसी से कोई संबंध नहीं हैं। ((6) एक चीज़ जो संबंधविहीन हो, वह अस्तित्ववान भी न होगी। (7) अतः अप्रमेय चीज़ का अस्तित्व हो नहीं सकता। लेकिन ऐन रैंड उस सर्वज्ञ, सर्वांतर्यामी, सर्वव्यापी, सर्वतोमुख के संबंध में अपनी विलक्षण तर्कपद्धति में भूल यह करती हैं कि वे यह नहीं बतातीं कि किसी संबंध वाली हस्ती के बारे में जो तर्क लागू हो सकते हैं। वे ही तर्क किसी सर्व संबंध वाली हस्ती पर कैसे लागू किए जा सकते हैं? पहले इस सर्वतोमुख और सर्वदर्शी की चुनौती को ठीक-ठीक समझ लें। यह वह अखिलेश है जिसके बारे में कहा गया है - Wherever there is a where, God is there. यह वह ईश्वर है जिसे तथ्यों का संग्रह नहीं करना पड़ता। इस ईश्वर के बारे में बाइबिल के साम-गान में कहा गया = He doth not know one thing now, and another anon, he sees all things at once. जब वह सभी कारकों और चरों से, चराचर से एक साथ एक समय से सभी समय तक संबद्ध है तब इतने अंतहीन चरों का मापन कैसे होगा? यह ठीक है कि ईश्वर सबसे कटकर एकांतवास नहीं करता। ईश्वर संबंध में है। लेकिन उसका वैशिष्ट्य यह है कि उसके संबंधों की डोर पूरे अग-जग से है। हमारे शरीर में आँख भी है, पैर भी किन्तु क्या हम कह सकते हैं कि हमारी आत्मा हमारे शरीर के किसी अंग विशेष में ही है? ठीक उसी तरह से ईश्वर की इस सृष्टि में उसका रस (एसेंस) कहां नहीं मानें? माप के लिए किसे छोड़े, किसे पकड़े? कौनसी चीज़ है जो ईश्वर के परिपथ (सर्किट) को सीमित (रेस्ट्रिक्ट) करती है? वह जो स्वयंप्रभु, स्वयंभू और स्वयंप्रकाश है, उसके चिद्विलास के किस अंश को अप्रासंगिक मानें? उस अनंताभिधेय के ऐश्वर्य की, उस अमृतगर्भ की लीला की परिसमाप्ति कहां है कि जहां से हमारा स्केल शुरू हो? भगवान सारी परिसीमाओं और सरहदों (बाउन्ड्रीज़) से स्वतंत्र है। ब्रह्म शब्द संस्कृत की जिस धातु ब्रिह से बना है। उसका अर्थ है बढ़ना, ग्रो करना यानी यह यथार्थ डायनेमिक है, जीवंत है। ऋग्वैदिक शब्द ऋत्त का अर्थ रि धातु से समझा जाना चाहिए। 'रि माने मूव करना। अब यदि ब्रह्म और ऋत्त गत्यात्मक हैं तो वे जड़ता को प्रोत्साहन कैसे दे सकते हैं? बुद्ध ने यही कहा था सब्बो पज्जलितो लोको, सब्बो लोको पकम्पितो- कि यह समूचा लोक (यूनिवर्स) प्रज्ज्वलन और प्रकंपन के सिवा कुछ नहीं है। यदि विश्व गति कम्पन और नर्तन में व्याख्यायित होता है तो वह किसी जड़ प्रगति-विरोधी तमस में जीवित नहीं रहेगा। तब विकास (इवॉल्यूशन) कोई ऐसा शब्द नहीं है जो जैविकी (बायलॉजी) तक सीमित हो। वह इस जगत की विविध शक्तियों की ओर भी इंगित करता है। जब तक ब्रह्म तक एक जड़ विचार (फिक्स्ड 7 आइडिया) नहीं है ना जितना वो गत्यात्मक है, उतना वो अप्रमेय है, उतना वा हमें कट्टरता से मुक्त करता है।

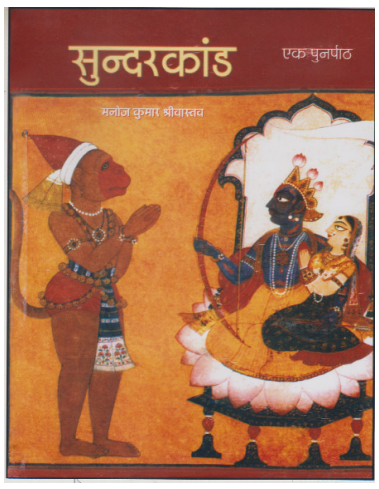

ईश्वर की अज्ञेयता (incomprehensibility) की बाइबिल के अनुसार व्याख्या यह है कि 'Incomprehensibility ariseth from an infinite perfection which cannot be fathomed by the short line of man's understanding' 344 3771547

और अगाध को, उस अविज्ञेय और अवेद्य के लिए क्या किस प्रमेय की निर्धार्यता निराधार ही होगी? उसकी अनिवर्चनीयता वस्तुतः उसकी गुणातीतता है। लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि ईश्वर के संबंध में साइंस बेकार है और अंधविश्वास ठीक है? उस बोधातीत के लिए बुडू ठीक है? वहां उत्कंठा और उत्सुकता, जिज्ञासा और पृच्छा नहीं चलेगी, कूपमंडूकता व अंधकार चलेगा? भगवान ज्ञानेश्वर को मिलता है कि मूढ़ को मिलता है? वह अजस्र है और अगाध भी। लेकिन वह तुक्के और बुझक्कड़ी का विषय तो नहीं। ज्ञान की गतिकी (डायनेमिक्स) में तो अहंत की ही अर्हता है। वहां तो प्रज्ञात्मा ही परमात्मा तक पहुंच पाता है। इसलिए नहीं कि उसका ज्ञान परमात्मा को विमोचित (डिकोड) कर सकेगा बल्कि इसलिए कि इस लक्ष्य के प्रति उसकी ज्ञानात्मक संवेदना में ईमानदारी है। तो ईश्वर मूर्ख की मनोसृष्टि नहीं है, न किसी लाइल्म की फंतासी। ज्ञानात्मक संवेदना की परिशुद्धता और एकाग्रता का ईश्वर के यहां तिरस्कार नहीं हो सकता, और न अविद्या का महांधकार ईश्वर के सान्निध्य में बचा रह सकता है। गुणातीत गुणी की बेकद्री करे और अगुणी की प्रतिष्ठा करे तो वह कलियुगी सत्ताधीश हुआ, ईश्वर नहीं। डी.सी. मैकिन्टोश chat gerich Theology as an Empirical Science याद आती है और याद आते हैं शिकागो विश्वविद्यालय के शैलर मैथ्यूज और एच.एन. वीमैन जिन्होंने वैज्ञानिक विश्वदृष्टि में ईश्वर को कहीं फिट करना चाहा। विज्ञान ईश्वर के विरुद्ध नहीं है। विज्ञान ईश्वर की दिशा में ही 7 उठा हुआ क़दम है। लेकिन जैसा कि आजकल के संकट धर्मशास्त्री (Crisis Theologists) कहते हैं कि God is not an object to be known scientifically but is nevertheless the great self-revealing reality, to be encountered and obeyed.

अप्रमेय का एक और आयाम है। ईसाई मान्यता यह है कि ईश्वर ने मनुष्य को अपने रूप में रचा। लेकिन इसका अर्थ यह हुआ कि मनुष्य की 'इमेज' ईश्वर की प्रतिनिधि है। तब अन्य प्राणियों का क्या? क्या वे ईशस्वरूप के प्रतिनिधि नहीं है? भारतीय जीवनदृष्टि इससे भिन्न है। ऋग्वेद (6/47/18) में कहा गया : रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव कि परमाता ने प्रत्येक रूप के अनुरूप अपना रूप बना लिया। यह दृष्टि जीवन के वैविध्य और ईश्वर के अप्रमेयत्व की ज्यादा अच्छी तरह से स्थापना करती है। यहां तक कि स्वयं मनुष्य की कोई एक स्वि छवि नहीं है। अरविंद (सावित्री 7/6) कहते थे - Many are God's forms by which He grows in man. इसलिए रूप की दृष्टि से भी एक अप्रमेयता है। ईश्वर को अनन्तरूपाभिधेय बताकर उसे किसी भी संकीर्णता से ही नहीं मुक्त किया गया बल्कि किसी भी रूप-विशेष को किसी प्रिविलेज या विशेषाधिकार से मुक्त किया गया। इसके चलते न कोई जाति किसी के ऊपर प्रिविलेज का दावा कर सकती है, न कोई रेस और न स्वयं मनुष्य ही।

सावन के सोमवार को गहरेबाजी का जलवा

प्रयागराज। सावन का महीना शिव की आराधना के लिए जाना जाता है और सावन के सोमवार का धार्मिक दृष्टि से खास महत्व है, लेकिन इस महीने प्रत्येक सोमवार को यहां होने वाली गहरेबाजी का भी अपना एक खास आकषर्ण है और इसे देखने दूर-दूर से लोग यहां खिंचे चले आते है। गहरेबाजी शीशम की सजी-धजी बग्घी के साथ एक खास अंदाज में कदम-दर-कदम चलते घोड़ों की दौड़ है। इसमें घोड़ों की टाप और ताल पर थिरकती चाल देखी जाती है। गहरेबाजी में दौड़ के लिए घोड़ो को साल भर प्रशिक्षित किया जाता है और प्रशिक्षित घोड़े सरपट भागने के बजाय एक-एक कदम बढ़ाकर दौड़ते हैं। प्रयाग गहरेबाजी संघ के संयोजक विष्णु महाराज ने बताया है कि प्रयागराज में गहरेबाजी की शुरूआत जब हुई थी उस समय यहां के पुरोहित, पंडे ही इसमें शामिल हुआ करते थे। बाद में यादव, चौरसिया, पंजाबी और मुसलिम भी इसमें हिस्सा लेने लगे। उन्होंने बताया कि घोड़े की चाल में सिंधी मादरी, डुल्की और चौटाला चाल शामिल हैं। घोड़े पालने के शौकीन और हर साल गहरेबाजी में अपना घोड़ा दौड़ाने वाले बदरे आलम ने बताया है कि गहरेबाजी में सिंधी नस्ल के घोड़े सबसे अधिक सफल हैं क्योंकि इनमें कदम-दर-कदम चलने का जन्मजात गुण होता है, जबकि काठियावाड़, पंजाब, मारवाड़ और अंग्रेजी नस्ल के घोड़ों को कदमबाजी सिखानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि गहरेबाजी कोई रेस नहीं है, बल्कि सावन के प्रत्येक सोमवार को इसे उत्सव की तरह मनाया जाता है और इसे देखने दूर-दूर से लोग आते हैं। वर्तमान में गहरेबाजी में दक्ष करीब 5-7 घोड़े हिस्सा ले रहे हैं और इस उत्सव में अन्य इक्के तांगे वाले भी आनंद लेने के लिए शामिल हो जाते हैं। प्रयाग गहरेबाजी संघ के अध्यक्ष बब्बन महाराज ने बताया है कि इस समय गहरेबाजी में बदरे आलम, लालजी यादव, गोलू महाराज, विष्णु महाराज और चकिया के गुड्डू अपने दक्ष घोड़े दौड़ाते हैं। भइयन महाराज के नाती विष्णु महाराज 71 वर्ष की आयु में भी गहरेबाजी में हिस्सा लेते हैं। गोलू महाराज ने बताया कि यह एक महंगा शौक है क्योंकि प्रतिदिन घोड़े की मालिश के लिए दो लोग लगे रहते हैं। वहीं घोड़े की प्रतिदिन की खुराक तीन पाव बादाम, चार लीटर दूध, एक पाव मक्खन और 200 रूपए की घास है। अब घोड़े की मालिश और सेवा के लिए उस्ताद लोग कम मिलते हैं। बब्बन महाराज ने कहा कि गहरेबाजी पर्यटन को बढ़ावा देने का एक अच्छा माध्यम हो सकता है और प्रशासन को इस दिशा में प्रयास करना चाहिए। घोड़े पालने के शौकीन कुछ लोगों की वजह से यह विधा अभी बची हुई है। उन्होंने बताया कि प्रसिद्ध तबला वादक पं. किशन महाराज वाराणसी में 80 के दशक में सुप्रभा रेस कराते थे जिसमें भइयन महाराज, गोपाल महाराज के घोड़े जाते थे। लेकिन किशन महाराज के निधन के बाद वाराणसी में यह आयोजन बंद हो गया। गहरेबाजी में लगने वाली बग्घी के बारे में बब्बन महाराज ने बताया कि आजादी से पहले यह पाकिस्तान से बनकर आती थी, लेकिन विभाजन के बाद दिल्ली के कुछ कारीगरों ने इसे बनाने की विधा सीखी और अब यह दिल्ली से बनकर आती है। इसे शीशम की लकड़ी से तैयार किया जाता है।

पूर्वोत्तर की पहाड़ियों का आनंद अब रेलवे के साथ

पूर्वोत्तर के पहाड़ से वन क्षेत्रों तक पर्यटकों और यात्रियों की पहुंच अब आसान होने वाली है। रेल मंत्रालय पूर्वोत्तर के पांच राज्यों में 2021 तक रेल का जाल बिछाने जा रहा है। इन राज्यों में नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय और सिक्किम शामिल हैं। सबसे पहला ट्रैक जून 2021 तक सिक्किम तक पहुंचाने की तैयारी है। यह सेवोक से रंगपो के बीच करीब 40 किलोमीटर लंबा होगा। इससे पर्यटन व कारोबार को भी बढ़ावा मिलेगा। सिक्किम की इस परियोजना के लिए मसौदे को पर्यावरण मंत्रालय की मंजूरी के लिए भेजा गया है। पर्यावरण मंत्रालय की मंजूरी के बाद परियोजना पर काम शुरू होगा। मंत्रालय जिन परियोजनाओं को 2021 में पूरा करने के लिए काम कर रहा है, उनमें मिजोरम सैरांग लाइन भी शामिल है। यह रेलवे का एक हिस्सा है। 18 किलोमीटर का लंबा ट्रैक मिजोरम के ऐजल दर को जोड़ देगा। मंत्रालय ने नगालैंड के कोहिमा से भी नेटवर्क का विस्तार करने की योजना तैयार की है। ट्रैक 17 किलोमीटर लंबा होगा, जो दाम और जुज्बा को जोड़ेगा।

पी.टी. उषा आइएएएफ के 'वेटरन पिन' के लिए नामित

नई दिल्ली। भारत की महान ट्रैक और फील्ड एथलीट पी.टी. उषा को खेल में उनके असाधारण योगदान के लिए अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स महासंघ के 'वेटरन पिन' के लिए मनोनीत किया गया है। भारत की सर्वश्रेष्ठ फर्राटा धाविकाओं में शुमार उषा की 'उड़नपरी' भी कहा जाता है। उन्होंने 1985 में जकार्ता एशियाई खेलों में 100 मीटर,200 मीटर,400मीटर, 400मीटर बाधा दौड़ और चार गुणा 400 मीटर में स्वर्ण पदक जीते थे। आइएएएफ के सीईओ जॉन रिजोन ने उषा को एक पत्र में लिखा,' हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि आपके क्षेत्र के संघ ने आपको आइएएएफ वेटरन पिन के लिए मनोनीत किया है जो विश्व एथलेटिक्स में बरसों से आपके योगदान के लिए है। उन्होंने सितंबर में कतर में होने वाली आइएएएफ की 52वीं कांग्रेस में आने का उषा को न्यौता भी दिया। उषा 1984 लॉस एंजीलिस ओलंपिक में 400 मीटर बाधा दौड़ के फाइनल में पहुंची थीं लेकिन सेकंड के सौवें हिस्से से कांस्य से चूक गई थीं।

ग्रामीणों ने खुद बना ली 5 कि.मी. की सड़क

छतरपुर। सरकार, नेता और प्रशासन ग्राम बदुआ के ग्रामीणों की महज 5 किमी की सड़क बनाने की मांग 25 साल तक अनसुनी करते रहे। बच्चों को स्कूल और गर्भवती महिलाओं को विकट परिस्थितियों में अस्पताल जाने को मजबूर होना पड़ता था। जब सब्र का बांध टूटा तो ग्रामीणों ने चंदा किया, श्रमदान किया और अपनी पांच किलोमीटर की सड़क तैयार कर जिम्मेदारों को करारा जवाब दिया है।

नया अनुसंधान : कार्यस्थल का भविष्य- 2025

डॉ. अर्पणा शर्मा के शोध प्रबन्ध का सारांश

कार्यस्थल का भविष्य लोगों के भविष्य से सम्बन्धित है। जब हम मे बदलाव आता है- जब हम चल साधनों पर बहुत अधिक निर्भर हो जाते हैं तथा जब हम गति से काम करने लगते हैं और अक्षय

प्रक्रियाओं व तकनीकों के प्रति कम सहनशील हो जाते हैं, तब हम कार्यस्थल में परिवर्तन की अपेक्षा करते हैं। इन परिवर्तनों को नियंत्रित या सीमित करने के प्रयत्न करने के बजाय, उद्यमों को उनके दोहन की आवश्यकता है। भविष्य का कार्यस्थल ऐसा होगा जो प्रवृतियों का पूर्वानुमान कर सके तथा कार्य के नए तरीकों को तेजी से प्रमुख आधार बना सके। सुवाह्य डेस्क सहित अनुक्रियाशील कार्य पर्यावरण से भविष्यवक्ताओं ने सब कुछ कह दिया है-गोलाकार शय्याओं से पोषण यंत्रों और कोमल रोशनी तक तथा व्यक्तिशः मस्तिष्क जकड़न के लिए थ्री-डी स्वलेखीय प्रति बिम्बात्मक प्रक्षेपण तक। भविष्य की इन दृष्टियों में सामान्य बात यह है कि वे कर्मचारी-केन्द्रित हैं।

भौतिक कार्यस्थल का रूपाकंन चाहे जैसा हो-काम की तथा कर्मचारीयों की बदलती हुई प्रकृति के संबध में बुनियादी अवधारणाए यह हैं कि प्रत्येक उद्यम में अधिकारों की जरूरत है। यदि उन्हें ये अधिकार नहीं मिलते हैं तो न केवल कम्पनियां उत्पादकीय लाभों और नवाचारी विचारण से वंचित रह जाएंगी अपितु वे कम प्रभावी कार्यस्थल रह जाएंगी जिससे कर्मचारियों को आकृष्ट करने तथा उन्हें वहीं रोके रखने की योग्यता भी प्रभावित होगी।

अधिकतर कारोबार सहमत है कि काम का भविष्य तकनीक की गहराई पर टिका रहेगा, बादलों पर आश्रित सॉफ्टवेअर से ए-1 तक। लेकिन तकनीक केवल अपने बल पर पर्याप्त नहीं है। तकनीक नहीं लोग काम का भविष्य निश्चित करेंगे।

आज विश्व पहले से कहीं बहुत अधिक खुला, जुड़ा हुआ तथा तेजी से संचलित है। अब जैसे ही नई पीढ़ी कार्य शक्ति के साथ प्रवेश करेगी तब वे अपने वैयक्तिव जीवन में उपलब्ध स्तर के उपरकण ही नहीं मांगेगे, काम के प्रति उनकी प्रत्याशाएँ ही भिन्न होंगी।

वे बिना अनुमति लिये उनके संगठन के किसी भी व्यक्ति से जुड़ने की आशा रखते हैं। वे चाहेंगे कि उन्हें भी सुना जाए तथा वे नए प्रकार के उपकरणों का भी उपयोग करने की अपेक्षा रखेंगे। अध्ययन बताते हैं कि अगले वर्ष 2020 तक यह पीढ़ी सभी कर्मचारियों का 50 प्रतिशत भाग बनेगी। यह समझना कि भविष्य का काम कैसा दिखेगा इन कर्मचारियों की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और यहां तक कि उनकी मांगों पर ही आकार लेगा।

आइये हम उन आधारभूत विस्तारों को देखे जो भविष्य में न केवल बदलेंगे तथा बदलने की शक्ति बनेंगे।

विस्तार

1. **सौदेश्य नेतृत्वः-** भविष्य में लोग केवल कम्पनियों के लिये ही काम नहीं करेंगे। वे उन कम्पनियों के लिये काम करेंगे जिनका उदेश्य स्पष्ट है तथा जो व्यक्तिगत मूल्यों को प्रतिध्वनित करेंगी। उदेश्य का यह केन्द्रीकरण भविष्य में कर्मचारियों के लिये शुभप्रद होगा, जहां अपेक्षाओं की पूर्णता व्यतीत समय से अधिक महत्वपूर्ण होगी। काम का भविष्य यंत्र व मानव की सहभागिता पर आश्रित रहेगा जहां मनुष्यों के लिए काम अर्थपूर्ण और वास्तविक होगा। जिन संगठनों का उदेश्य स्पष्ट होगा वे कर्मचारियों को उनकी वहां विद्यमानता का गहन अर्थ सिद्ध करते हुए उत्कृष्ट प्रतिभाओं को निःसंदेह आकृष्ट करेंगे।

2. **बहु-आयामी संचारः-** मोबाइल क्रांति ने लोगों के संचार के तरीकों को विकट रूप से बदल डाला है। हमने ई-मेल की लिखित जनरीति को बहुआयामी दुनिया में बदल दिया है, जहां वीडियो, पाठ्य, ईमेजिस, फोटो और उपहारों की अपनी भूमिका है। चूंकि हम हमारे व्यक्तिगत जीवन पर ध्यान देते हैं, इसी कारण कार्यस्थल पर वीडियो प्रभावी है। अध्ययन से ज्ञातव्य है कि लोग समाचा संचार में वीडियो देखने में पांच गुना अधिक समय बिताते हैं फोटो या पठित पाठ्य की तुलना में जब कि काम पर सूचना की सघनता व्याख्येय होकर बढ़ती है, तो शोरगुल से गुजरते हुए वीडियों सबसे शक्तिशाली तरीका रह जाता है तथा वह ध्यान कीमती अतिरिक्त क्षणों को झपट लेता है। ए आई के उदय के साथ कई कार्यस्थलों पर चेटबॉट्स ने प्रवेश पा लिया है तथा शीघ्र ही कर्मचारी प्रशासनिक महत कार्यों की देख-रेख के लिए उन पर भरोसा करने लगेंगे ताकि वे काम पर अधिक ध्यान केन्द्रित कर सकें।

3. **एकीकृत व डिजिटल तकनीकः-** काम करने के लिये लोग हमेशा बहु-उपकरणीय उपयोग करना चाहेंगे। भविष्य में काम के लिये सॉफ्टवेअर और अन्य उपकरण हेतु 'बेस्ट ऑव ब्रीड' मार्ग अपनाकर इस लचीलेपन को समर्थ बनाना अधिक महत्वपूर्ण है।

यह निराशाजनक है जब आपको यह पता चलता है कि आप किसी दूसरे दल के व्यक्ति की कड़ी या मिसिल तक नहीं पहुंच सकते क्योंकि उनका सॉफ्टवेअर आपके स्वयं के सॉफ्टवेअर के संयोज्य नहीं है, जैसा कि प्राप्य आइ टी प्रणालियों के साथ है। भविष्य के कार्यस्थल में हम जो उपकरण प्रयोग में लाएंगे उनमें पहले से ही आन्तरिक निर्मिति होगी। आज कार्यस्थल डिजिटल से भी आगे का है। कार्य स्थलों को वास्तविक रूप में 'डिजिटल होने के लिए केवल एक 'डिजिटल स्ट्रेटेजी ऑफिसर' ही नहीं हो सकता। इसे जरूरत है मानव संसाधनों से विपणन और उससे भी सी-स्वीट तक यह प्रत्येक व्यक्ति के अधिदेश का भाग होने की।

4. **संस्कृतिः-** सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन, विविधता, समावेश पहल, प्रतिभाओं की कमी, स्वचालन, विकासशील तकनीकें तथा आंकड़ों का आक्रमण कार्यस्थल संस्कृति में त्वरित और दूरगामी परिवर्तन लाने के लिए केन्द्रीभूत हो रहे हैं। ये दल और अधिक वैविध्यपूर्ण और समावेशक होंगे, सुदूर तक विस्तृत हो सकते है तथा उनकी पृष्ठभूमियां भी भिन्न हो सकती हैं। विश्वास में कपट होगा, चूंकि कर्मचारियों, उत्पादकता और कार्य प्रतिरूपों के संबध में नियोक्ताओं की बहुत अधिक आंकड़ों तक पहुंच होगी। कर्मचारी भी नियोक्ताओं द्वारा उनके सबंध में एकत्र आँकड़ों को लेकर अधिक विश्वस्त होने की अनुभूति करेंगे। सन् 2025 तक लगभग 75 प्रतिशत वैश्विक कार्यशक्ति युवा वयस्कता प्राप्त कर लेगी। अधिकतर बड़े संगठनों की निगमित संस्कृतियां से पीढ़ी की आदतों और आकांक्षाओं से सीधे आकार लेगीं। ऐसा पर्यावरण सुलभ कराना, जहां लोग स्वयं का मूल्य पहचानें, स्वतंत्र व एक दता का स्वयं को अंश समझें, पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होगा। साथ ही कार्यालय के बाहर यानी 'घर से काम करके लाना' या 'दूर कहीं पर काम करने' का लचीलापन अधिक महत्वपूर्ण होगा।

5. **संरचनाः-** उच्च-निष्पादित संगठन सशक्त जालतन्त्रों, संस्कृति के द्वारा समन्वित सूचना पद्धतियों और प्रतिभा के सही स्थान पर उपयोग के आधार पर प्रचालित होते हैं। कम्पनियां संगठन को स्वयं के भविष्य के लिए पुर्नरूपांकन पर केन्द्रित रहती हैं और कई संगठन न केवल अभिकल्पन ही कर रहे हैं किंतु इस नए संगठन का निर्माण भी कर रहे हैं। जब कि जालतन्त्र और पद्धतियों की अनुकूलता संगठनात्मक धर्मसत्ता को प्रतिस्थापित करती हैं तो 'आप किसके लिये काम करते हैं' यह पारम्परिक प्रश्न 'आप किसके साथ काम करते है' इस प्रश्न से प्रतिस्थापित कर दिया गया है। संगठनात्मक अभिकल्पन और परिवर्तन पेंचीले हैं। कई संगठनात्मक पुर्नरूपाकंन असफल हो जाते हैं क्योंकि वे कीमतें कम करने के अभ्यास मात्र बनकर रह जाते हैं। अन्य को कम्पनी नेतागिरी का प्रति रोध सहना पड़ता है। वास्तव में बहुत से परामर्शक व्यावसायिक प्रतिष्ठान कथात्मक रूप में रिपोर्ट देते हैं कि करीब 70 प्रतिशत पुर्नसंगठन अभावग्रस्त हो जाते हैं कार्यपालक दाम की रचनात्मक अवज्ञा के कारण।

निराशा भी सामान्य है भविष्य के संगठन का रूपांकन करना कठिन तथा कभी-कभी त्रुटि व प्रयोग की मिश्रित परियोजना बनकर रह जाती है। जो कि कागज पर तैयार से परे हो जाती है। यह एक निरन्तर गतिशील और एक तरह से कभी समाप्त न होने वाली प्रक्रिया है। फिर भी जो कम्पनियां इन चुनौतियां के रहते आगे आती हैं, उनके लिए आर्थिक निष्पादन, उत्पादकता, कर्मचारी आबंध तथा अन्य कई लाभों के रूप में ऋण चुकाना बहुत भारी हो सकता है।

पूर्वकाल में अधिकतर संगठन कार्यकुशलता और प्रभावोत्पादक के लिए अभिकल्पित होते थे, जो जटिल व अप्रकट संगठन हो जाते थे। परिणामतः व्यावसायिक निदर्श जो ज्ञातव्य वाणिज्यिक प्रतिरूपों पर आधारित होते, वे अनजान भविष्य और भावी विखण्डन के युग के लिए अनुपयुक्त हैं। केवल कार्य कुशलता के बजाय, सफल संगठन गति, फुर्तीपालन और अनुकूलन की दृष्टि से अभिकल्पित किये जाएंगे ताकि वे वैश्विक व्यवसायिक पर्यावरण में स्पर्द्धा कर विजयी हो सकें।

संगठनों ने दल-केन्द्रित निदर्श के महत्व को समझ लिया है। एक कम्पनी के चौकन्ना रहने के लिए, दल बनाएं तथा उन्हें शीघ्रता से विभक्त किया जाना चाहिए। उच्च-निष्पादन कम्पनियां एक 'डिजिटल ग्राहक अनुभव दल' निर्मित कर सकती हैं, दल के लिए व्यक्तियों को चुन सकती है तथा एक या दो वर्षों में उन्हें एक नया उत्पाद या सेवा, अभिकल्पित और निर्मित करने को कह सकती हैं। बाद में यह दल विभन्न हो सकता है, जब दल सदस्य नई परियोजना हेतु आगे बढ़े। बिना जोखिम के दल के मध्य आगे बढ़ने की यह योग्यता उच्च-निष्पादन कम्पनियों के लिए गुण-दोष विवेचक है।

6 **काम की प्रक्रियाएंः-** भविष्य का कार्यस्थल उदेश्य का साझा भाव है, सहयोग की संस्कृति है, आपके व्यावसायिक मूल्य को बढ़ाने के लिए विशेष तौर पर निर्मित पद्धति- हितैषिता के दोहन का तरीका है। यह लोगों को अपनी पूरी श्रेष्ठता से काम करने के लिए प्रेरित कर सशक्त बनाता है ताकि संसूचित व सहयोग कर समस्याओं को हल कर सके। यह नियुक्ति को गहन और उत्पादकता को प्रोत्साहित करता है।

भविष्य के कार्यस्थल का प्रमाणक होगा। मानव कर्मचारियों का डिजिटल होकर साथ-साथ काम करना। इस नए निर्देश के सफल होने में डिजिटल योग्यता हेतु एक सम्रग दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी।

जब कि भविष्य का कार्यस्थल नए मंच जोड़ेगा तथा नए डिजिटल उत्पादों और सेवाओं को एकीकृत करेगा तो नए व्यक्तियों, पद्धतियों, प्रक्रियाओं तथा डिजिटल परिदृश्य को सहारा देने हेतु नई भूमिकाओं की जरूरत होगी। डिजिटल सामर्थ्य उपयोगकर्ता के अनुभव को लगातार सुधारने का तथा डिजिटल सक्षमताओं व व्यापारिक फुर्तीलेपन को प्रोन्नत करने का एक संरचित तरीका है। कर्मचारीयों की सक्षमताओं को बदलने के लिये लगातार रिक्तताओं और उच्च-कौशल और परस्पर कौशल वाले कर्मचारीयों को चिन्हित करने हेतु नेताओं की आवश्यकता पड़ेगी ताकि वे नए कार्य दायित्वों को सम्पादित करने के लिए तैयार रहें।

भविष्य का कार्यस्थल एक सावधान संगठन होगा जो कि निष्पादन को उठाने व लागत को घटाने के लिए एक कार्यनीतिक ढंग से प्रक्रियाओं और सेवाओं को बदल सके।

भावी कार्यस्थल के 5 भवन खण्ड

- प्रायः नवचारी डिजिटल रूपों में विद्यमान व नए, सही उत्पादों को शीघ्रता से बाजार में पहुंचाने हेतु आपकी योग्य प्रक्रियाएं।
- वास्तविक जीवन में और यर्थाथतः आपके ग्राहकों के लिये, वे चाहे जो माध्यम अपनाते हों, बसे अधिक उपयोगकर्ता का अनुभव होना।
- आपके कर्मचारियों के लिए सर्वश्रेष्ठ उपयोगकर्ता अनुभव होगा-स्थायी, अस्थायी और बंधन मुक्त।
- यह समझकर कि आपके पास क्या है, आप क्या संग्रहीत करते हैं तथा मूल्यलब्धि कर आप कैसे विश्लेषण कर सकते हैं- इन दृष्टियों से आपके आँकड़ों का सर्वोत्तम उपयोग करने की कार्यनीति।
- इन दृश्यों के पीछे चरम प्रचालन कार्य कुशलता ताकि उपर्युक्त सभी बातें संभव हो सके।

भावी परिवर्तन की योजना कभी सरल नहीं होती। इस आलेख में ऊपर साझा की गई अर्न्तदृष्टि, उन लोगों की मदद कर सकती हैं जो तेजी से बदलते हुए बाजार स्थल पर स्पर्द्धा करने हेतु अपने कार्य स्थल को सर्वाधिक गतिमान बनाने की सोच रहे हों। कल्याण को केन्द्र में रखते हुए सभी छः विस्तारों के संबध में अब उठाए गये छोटे कदम, शीघ्र ग्राहकीकरण, प्रेरणा, सम्बद्धता तथा कार्यस्थल पर वैयक्तितता से भविष्य में बड़ी कम्पनियों के सागर में संगठनों को सहायता मिलेगी।

हिन्दी अनुवाद- रमेश दीक्षित

वुमेन एक्सीलेंस अवार्ड विजेता डॉ. अपर्णा शर्मा

अशोक वक्त

अपर्णा शर्मा, मानव संसाधन के क्षेत्र में सुप्रतिष्ठित हैं। वे 'इण्डियन बिजनेस वुमेन ऑफ द ईयर 2019 अवार्ड', और 'आई.एल.डी.सी-ए.एम.पी वुमेन एक्सीलेंस अवार्ड 2019' से सम्मानित हुई हैं। सन् 2018 में उन्हें आई.सी.बी.एम.-ए.एन.पी. एकेडेमिक एक्सीलेंस अवार्ड और इण्डियन वुमेन अचीवर अवार्ड प्राप्त हुए थे। छटी वार्षिक ग्लोबल कन्वेंशन संकल्प 2016 में उन्हें ग्लोबल आउट स्टेडिंग कार्पोरेट अवार्ड मिला था। सन 1913 में वर्ल्ड एच आर डी कांग्रेस और इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक इंटरप्राईज द्वारा वुमेन अचीवर्स अवार्ड अपर्णा शर्मा को प्रदान किया गया था। 20 वीं वर्ल्ड एच आर डी कांग्रेस-2012 में वे एच आर सुपर अचीवर अवार्ड से नवाजी गई थीं। मानव संसाधन के क्षेत्र में अपनी 23 वर्षों की गौरवपूर्ण यात्रा में अपर्णा ने विभिन्न भूमिकाओं में अनेक कीर्तिमान कायम किए हैं। टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस, मुम्बई से पर्सनल मेनेजमेंट और इन्ड्रस्टियल रिलेशन में स्नाकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद डॉ. अपर्णा ने देश के अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों में महत्वपूर्ण दायित्वों को निभाया और अनेक पुरस्कार अर्जित किए हैं। वे नेशनल एच आर डी नेटवर्क, मुम्बई चेप्टर (2012-2015) की मानद कोषाध्यक्ष और एक्जीक्विटिव कमेटी की सदस्य रही हैं। वे 2012-2015 के लिए नेशनल एक्जीक्विटिव बोर्ड ऑफ एन एच आर डी एन की सदस्य चुनी गई थीं।

प्रकृति प्रेमी डॉ. अपर्णा शर्मा एक अच्छी शौकिया छाया चित्रकार हैं। उन्हें भ्रमण और अध्ययन का बड़ा चाव है। अपनी लगातार व्यस्तताओं के बीच वे प्रतिदिन कुछ नया अवश्य पढ़ती हैं। उनके निजी संग्रह में शताब्दी की अनेक सर्वोत्तम पुस्तकें मौजूद हैं।

सन् 2015 में प्रकाशित डॉ. अपर्णा शर्मा की पुस्तक 'रियालटी बाइट्स-द रोल ऑफ एच आर इन टूडेज वर्ल्ड' अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित और चर्चित रही है, जिसका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हो चुका है। उनकी दूसरी पुस्तक 'बिटवीन यू एन्ड मी' ने भी अपार प्रसिद्धी प्राप्त की है, जिसकी भूमिका पद्मभूषण, पद्म श्री डॉ. देवी शेटटी ने लिखी है। डॉ. अपर्णा बच्चों की शिक्षा और मार्गदर्शन के क्षेत्र में सक्रिय हैं। प्रौढ़ शिक्षा में भी उनकी प्रतिभागिता निरन्तर बनी हुई है। मुम्बई के वृद्धाश्रमों में वे अपने अमूल्य समय का योगदान करती हैं।

कथक के विलक्षण प्रयोक्ता और विशिष्ट विद्वान

–अशोक वक़्त

डॉ. पुरू दाधीच को संगीत-नाटक अकादमी पुरस्कार दिए जाने की घोषणा ने मन में आत्मीय प्रसन्नता भर दी। वैसे तो यह पुरस्कार उन्हें कई वर्ष पहले ही मिल जाना चाहिए था, बहरहाल देर आयद दुरस्त आयद...। उनसे प्रथम परिचय को आधी सदी से ज्यादा समय बीत गया है। उनसे प्रथम परिचय का सुयोग बना था, अपने स्कूली साथी बालकृष्ण महन्त के माध्यम से। बालकृष्ण के डाबरी पीठा स्थित आवास के सामने मोरछली मन्दिर के एक कमरे में उन दिनों पुरू दाधीच अपना अध्ययन और नृत्य अभ्यास करते थे। वहीं सन् 1966-67 में उनसे मिलना हुआ था। आरंभिक मुलाकातों में जो आत्मीय रिशता बना था, वह आज तक वैसा ही बना हुआ है। बालकृष्ण के पिता जी पं.नृसिंहदास महन्त प्रसिद्ध तबला वादक थे और उनके निवास पर संगीत गोष्ठियों के आयोजन हुआ करते थे, जिनमें डॉ. दाधीच की नृत्य प्रस्तुति देखने के अवसर पहले-पहल बने थे।

जब मैं दैनिक विक्रम दर्शन का सम्पादन कर रहा था तब मेरे आग्रह पर डॉ. दाधीच ने कुछ लेख लिखे थे। मुझे स्मरण है कि विक्रम विश्वविद्यालय के युवा उत्सव की नृत्य-संगीत प्रतियोगिताओं की बड़ी संतुलित और प्रमाणिक समीक्षाएं डॉ. दाधीच ने विक्रम दर्शन के लिए लिखीं थीं।

प्रख्यात नृत्यांगना उमा शर्मा जब कालिदास समारोह में आई थीं, तब मैंने अपनी संस्था टेग इण्डिया की ओर से विद्यार्थी विराम में उनका अभिनंदन किया था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. पुरू दाधीच ने की थी। डॉ.

उमा शर्मा अभिनंदन समारोह में अध्यक्षीय भाषण देते हुए डॉ. पुरू दाधीच

दाधीच का अध्यक्षीय भाषण सुनने के बाद उनकी कथक विषयक विद्वता की प्रशंसा उमा शर्मा ने भी की थी।

डॉ. दाधीच की नियुक्ति जब लखनऊ के भातखण्डे संगीत महाविद्यालय में हुई थी तब मैंने उनकी विदाई में डॉ. पुरू दाधीच निशा का आयोजन विक्रम कीर्ति मन्दिर में किया था, जिसमें अतिथि के रूप में डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन, तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री और लेखक सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह और सर्वोदयी एस.एन. सुब्बाराव के साथ ही बड़ी संख्या में उज्जैन के कलाकार और सुधिजन सम्मिलित हुए थे।

सुमन जी को सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार और साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त होने पर मैंने अपनी संस्था 'रंग प्रभात' द्वारा 'सुमन सम्मान

सुमन सम्मान समारोह में डॉ. दाधीच का स्वागत करते हुए नृत्याचार्य राजकुमुद

समारोह' का आयोजन 18 और 19 मार्च 1975 को किया था। समारोह की शुरूआत परिसंवाद से हुई थी, जिसका विषय था- 'भारत के लिए एक सांस्कृतिक नीति का प्रश्न'। परिसंवाद में प्रख्यात समाज विज्ञानी डॉ. श्यामचरण दुबे तो नहीं आ सके थे पर उनके विचारोत्तेजक बेक ग्राउन्ड पेपर का वचान प्रो. संतोषराज जुल्का ने किया था। परिसंवाद में डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, शरद जोशी, डॉ. पवन कुमार मिश्र और कृष्ण कमलेश के वक्तव्य हुए थे। मैंने डॉ. धर्मवीर भारती के लोकप्रिय उपन्यास गुनाहों का देवता के नायक पर केन्द्रित नाट्यालेख 'चन्दर और चन्दर' लिखा था। जिसकी एकल नाट्य प्रस्तुति धीरेन्द्र कुमार ने सुमन सम्मान समारोह में की थी और ज्योति स्वरूप के निर्देशन में 'शय्या' का नाट्य मंचन किया गया था। सुमन सम्मान समारोह के लिए विशेष रूप से डॉ. पुरू दाधीच लखनऊ से उज्जैन आए थे और उनकी नृत्य प्रस्तुतियों में समारोह का चर्मोत्कर्ष निर्मित हुआ था। पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमन जी के अत्यन्त प्रिय और आदरणीय कवि थे। सुमनजी निराला की 'राम की शक्ति पूजा' का बड़ा प्रभावी पाठ किया करते थे। डॉ. दाधीच ने समारोह में 'राम की शक्ति पूजा' के साथ ही निराला की 'जूही की कली' की यादगार नृत्य प्रस्तुति की थी। सुमन जी के एक गीत को भी उन्होंने अपने नृत्य में रूपायित किया था। डॉ. दाधीच नृत्य निपुण होने के साथ ही साहित्य और विशेषतः काव्य में भी निष्णात हैं। उनकी सृजनयात्रा की तो शुरूआत ही काव्य रचना से हुई थी। जब वे पांचवी कक्षा में थे, तब उन्होंने अपनी स्वरचित कविता का पाठ कर सभी का ध्यान आकर्षित कर लिया था। सुमन जी तो यही चाहते थे कि डॉ. दाधीच साहित्य के क्षेत्र में ही आगे बढ़ें। डॉ. दाधीच के ही शब्दों में- पद्मभूषण डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन मुझे केवल साहित्य साधना के लिए प्रेरित करते थे। वे कहा करते थे कि तुम्हें साहित्य रचना का नैसर्गिक गुण प्राप्त है, उसी की साधना करो। तो,

'रंग प्रभात' परिवार के साथ मध्य में (बैठे हुए) डॉ. शिवमंगल सुमन और डॉ. पुरू दाधीच

कल्पनाशील काव्य-दृष्टि से सम्पन्न डॉ. पुरू दाधीच ने जब सुमन सम्मान समारोह में निराला की दो प्रसिद्ध रचनाओं पर केन्द्रित विलक्षण नृत्य प्रस्तुति की थी तो विक्रम कीर्ति मन्दिर में मौजूद प्रत्येक प्रेक्षक रोमांचित हो गया था। मैंने लिखा था तब- 'यह रचनाएं मालव-मिट्टी से ही उपजे प्रतिष्ठित कलाकार डॉ. पुरू दाधीच ने अपनी मनोरम नृत्य शैली में प्रस्तुत की ....उनकी साधना अभिभूत कर गयी, उज्जैन को गर्व है अपने इस प्रयोगशील कलाकार और नृत्यविद् पर...।' अपनी प्रस्तुति के लिए डॉ. दाधीच सहयोगी कलाकार के रूप में कमला श्रीवास्तव को और सरोद पर संगत के लिए डॉ. सुप्रभात पाल को लखनऊ से साथ लेकर आए थे। डॉ. दाधीच के उज्जैन के अभिन्न मित्र शीतल कुमार माथुर ने नृत्य प्रस्तुति के साथ गायन किया था और उमाशंकर भट्ट ने तबला पर संगत की थी।

इन्दौर के रवीन्द्र नाट्य ग्रह में जब डॉ. दाधीच के षष्ठीपूर्ति अभिनन्दन का भव्य समारोह आयोजित किया गया था तब उसके संचालन के लिए बड़े आग्रह के साथ मुझे आमंत्रित किया गया था। वैसे तो किसी कार्यक्रम के संचालन के लिए उज्जैन से बाहर में कभी जाता नहीं हूं पर यह एक अपवाद ही था कि डॉ. दाधीच के प्रति अपने आत्मीय सम्मान भाव के कारण मैं इन्दौर गया था। समारोह में इन्दौर के कलाकार और सुधिजन तो बड़ी संख्या में मौजूद थे ही और उज्जैन से भी दर्जनों कलाकार बड़े श्रद्धाभाव से सम्मिलित हुए थे।

डॉ. दाधीच को कालिदास समारोह में व्याख्यान के लिए केई बार आमंत्रित किया गया और हर बार उनके विशेषज्ञतापूर्ण व्याख्यान को सुनकर देश भर के विद्वानों को प्रभावित होते हुए मैंने देखा है। कई वर्ष पहले जब इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय में कुलपति की नियुक्ति होने वाली थी तब मेरी हार्दिक इच्छा थी कि डॉ.दाधीच वहां कुलपति बनें। इस बारे में जब मैंने सुमनजी से चर्चा की थी तो वे भी तुरन्त प्रसन्नतापूर्व मेरे सुझाव से सहमत हो गए थे। मैंने तब डॉ. दाधीच के वैदुष्य को रेखांकित करते हुए एक लेख भी लिखा था। जैसा कि अक्सर होता है, विश्वविद्यालयीन राजनीति के चलते डॉ. दाधीच की कुलपति पद पर नियुक्ति नहीं हुई और खैरागढ़ का विश्वविद्यालय एक सुयोग्य नेतृत्व से वंचित ही रह गया।

मैं इसे अपने जीवन का सौभाग्य ही मानता हूं कि डॉ. पुरू दाधीच जैसे प्रयोक्ता और विद्वान से मेरा सुदीर्घ आत्मीय रिश्ता निरन्तर बना हुआ है।

नृत्य जगत के शिखर पुरुष डॉ. पुरू दाधीच

–पद्मजा रघुवंशी

उज्जैन नगरी के ही पंडित ओंकारलाल दाधीच के सुपुत्र डॉ. पुरु दाधीच का इस वर्ष कथक नृत्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए संगीत नाटक अकादमी अवॉर्ड हेतु चयन किया गया है। डॉ. पुरू दाधीच ने अपनी सुदीर्घ सांगीतिक यात्रा में अनेक कीर्तिमान रचे हैं। अनेक कृतियां उनकी परिष्कृत लेखनी से कला जगत तक पहुंची हैं। उनको असाधारण अध्ययन और विषय पर उनकी गहरी समझ ने कथक जगत में उन्हें न सिर्फ विद्वान वरन तात्विक आधार पर नृत्य के प्रत्येक मर्म को सिद्ध करने वाले प्रयोगता की प्रतिष्ठा दी है। उनकी अद्भुत सामर्थ्य देख कर उन्हें महामहोपाध्याय से की उपाधि से अलंकृत किया गया है। संस्कृत नाट्य प्रयोग विज्ञान तथा कालिदासीय रूपक विषय पर और कथक नृत्य का उद्भव और विकास विषय पर शोध प्रबंध प्रस्तुत करके डॉ. दाधीच ने आरंभ से ही मंचीय प्रदर्शन और उसके शास्त्र को महत्व दिया तथा यह प्रतिपादित किया कि शास्त्र सम्मत मंच प्रदर्शन ही उत्कृष्ट मंच प्रदर्शन होता है। प्रस्तुति की बारीकियों को समझने के लिए शास्त्र के आधार के महत्व को समझते हुए डॉ. दाधीच ने अनेक पुस्तकों के माध्यम से विद्वत जनों से लेकर नवांकुर नर्तकों को ऐसे दस्तावेज मुहैया करा दिए हैं, जिनके आधार पर अब शास्त्रीय कथक नृत्य का मध्य प्रदेश में स्थान एक अलग ही ऊंचाई तक पहुंचा है। कथक नृत्य शिक्षा के दो भाग ,अभिनव ताल मंजरी ,अभिनय दर्पण, एकादश नाट्य संग्रह और प्रयोक्ता गण, संस्कृत प्रयोग विज्ञान तथा कालिदासीय रूपक ,नृत्य सूत्रम्, नाट्यशास्त्र का संगीत विवेचन,

अष्टोत्तर शत ताल लक्षणम् ,कथक डांस सिलेबी, नृत्य निबंध तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित शताधिक लेख आपकी लेखन की संपन्नता को बताते हैं

कथा कहे सो कथक कहावे की परिभाषा को चरितार्थ करते हुए डॉ. दाधीच नें अनेक वैदिक, धार्मिक,पौराणिक कथाओं को नृत्य के रूप में परिवर्तित करके प्रस्तुत करने की एक अनोखी परंपरा निर्धारित की है और अनेक रचनाएं तैयार की हैं। लगभग 100 नृत्य नाटिकाओं का सृजन व प्रदर्शन आपके सुदीर्घ कला के समृद्ध इतिहास में दर्ज हैं जैसे प्रकृति पुरुष कालिदास, प्रतिकल्पायन ,इंदुमती स्वयंवर, कुंभ महापर्व, उजैन दर्शन, अखिल भारतीय संस्कृत परिषद के मंच पर सुधाभोजनम, अष्टनायिका और सूर पंचशती समारोह के अवसर पर उधो मोहि ब्रज बिसरत नाहीं। इन कालजयी रचनाओं पर आज की युवा पीढ़ी नर्तन करती है।

कथक नृत्य की प्रामाणिक पाठ्य पुस्तकों का डॉ.दाधीच ने सर्वप्रथम लेखन किया है और मध्य प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों में कथक नृत्य विषय की प्रस्तावना के सार्थक प्रयास किए हैं। उनके मार्गदर्शन में 10 विद्यार्थियों को पी-एच.डी उपाधि प्राप्त हुई है तथा 8 विद्यार्थी शोध कार्य में निमग्न हैं। कथक की ध्रुपद नर्तन नृत्य संगीत जैसी अनेक विस्मृत परंपराओं का उन्होंने उद्धार किया है। उन्होंने प्रचलित तालों में तत्कार, आमद, तोड़े, परण आदि की रचना कर उनके नर्तन को पुनः प्रचारित किया और प्रतिष्ठित किया है। उन्होंने छंदों के अनुरूप इस प्रकार से गीतों की रचना की है, जिसमें सब कुछ स्पष्ट हो जाए ताल के 10 प्राण कहे जाने वाले अंगों की क्रियात्मक जानकारी के लिए जत्ती माल, यति माला ,ताल माला जैसे लक्षण पर्व की रचनाएं भी की हैं। अर्धनारीश्वर रितु नायिका भेद ,नवरस, सोलह श्रंगार आदि विषयों पर अनेक सरस कविताओं की रचना डॉ. दाधीच ने की है और संस्कृत के श्लोकों पर नाट्य शास्त्रीय मुद्रा, करण, अंगहारों से सुसजित प्राचीन शैली की अनेक रचनाएं की हैं। नाट्यशास्त्र के अध्येता तथा नृत्य कला के सैद्धांतिक और क्रियात्मक पक्षों पर समान अधिकार रखने वाले डॉ. पुरू दाधीच ने अपनी कला यात्रा का आरंभ कोमल करुण गीतों से किया था। पुरू जी के मन की सूक्ष्म मनोभावनाओं की अभिव्यक्ति इन गीतों में हुई हैं। डॉ. दाधीच ने बाजे पायलिया छनन छनन छन मनभावन साजन सुन सुन सुन या आखिर तुम भी गंध रही महकी महकी/ और बह चली, मुट्ठी बांधी कस कस कितनी/ कब किसने मारुत मुख मोडा/आखिर चिड़िया रही बन की चहकी चहकी और उड़ चली/ कुछ ऐसे गीतों के बोल रचे हैं। डॉ. दाधीच का कहना है कि प्रत्येक कला जीवन के अनुभव को ही व्यक्त करती है ।

कलम के सिपाही प्रेमचंद

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी था तथा पिता मुंशी अजायबराय लमही में डाकमुंशी थे। उनकी शिक्षा का आरंभ उर्दू, फारसी से हुआ और पढ़ने का शौक उन्हें बचपन से ही लग गया। 13 साल की उम्र में ही उन्होंने तिलिस्म-ए-होशरुबा पढ़ लिया और उन्होंने उर्दू के मशहूर रचनाकार रतननाथ 'शरसार', मिर्ज़ा हादी रुस्वा और मौलाना शरर के उपन्यासों से परिचय प्राप्त कर लिया। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी।1910 में उन्होंने अंग्रेजी, दर्शन, फारसी और इतिहास लेकर इंटर पास किया और 1919 में बी.ए. पास करने के बाद शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए।

सात वर्ष की अवस्था में उनकी माता तथा चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त हो जाने के कारण उनका प्रारंभिक जीवन संघर्षमय रहा। उनका पहला विवाह उन दिनों की परंपरा के अनुसार पंद्रह साल की उम्र में हुआ जो सफल नहीं रहा। वे आर्य समाज से प्रभावित रहे , जो उस समय का बहुत बड़ा धार्मिक और सामाजिक आंदोलन था। उन्होंने विधवा-विवाह का समर्थन किया और 1906 में दूसरा विवाह अपनी प्रगतिशील परंपरा के अनुरूप बाल-विधवा शिवरानी देवी से किया। उनकी तीन संताने हुईं- श्रीपत राय, अमृत राय और कमला देवी श्रीवास्तव। 1910 में उनकी रचना सोजे-वतन (राष्ट्र का विलाप) के लिए हमीरपुर के जिला कलेक्टर ने तलब किया और उन पर जनता को भड़काने का आरोप लगाया। सोजे-वतन की सभी प्रतियाँ जब्त कर नष्ट कर दी गईं। कलेक्टर ने नवाबराय को हिदायत दी कि अब वे कुछ भी नहीं लिखेंगे, यदि लिखा तो जेल भेज दिया जाएगा। इस समय तक प्रेमचंद, धनपत राय नाम से लिखते थे। उर्दू में प्रकाशित होने वाली ज़माना पत्रिका के सम्पादक और उनके अजीज दोस्त मुंशी दयानारायण निगम ने उन्हें प्रेमचंद नाम से लिखने की सलाह दी। इसके बाद वे प्रेमचन्द के नाम से लिखने लगे। उन्होंने आरंभिक लेखन 'ज़माना' पत्रिका में ही किया। जीवन के अंतिम दिनों में वे गंभीर रूप से बीमार पड़े। उनका उपन्यास 'मंगलसूत्र' पूरा नहीं हो सका और लम्बी बीमारी के बाद 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया। उनका अंतिम उपन्यास 'मंगल सूत्र' उनके पुत्र अमृतराय ने पूरा किया।

प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी कहानी के पितामह और उपन्यास सम्राट माने जाते हैं। यों तो उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 से हो चुका था पर उनकी पहली हिन्दी कहानी 'सरस्वती' पत्रिका के दिसम्बर अंक में 1915 में सौत नाम से प्रकाशित हुई और 1936 में अंतिम कहानी 'कफन' नाम से प्रकाशित हुई। बीस वर्षों की इस अवधि में उनकी कहानियों के अनेक रंग देखने को मिलते

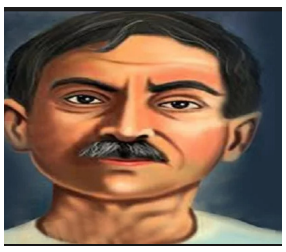

प्रेमचंद जयन्ती/31 जुलाई

हैं। उनसे पहले हिंदी में काल्पनिक, एय्यारी और पौराणिक, धार्मिक रचनाएं ही लिखी जाती थी। प्रेमचंद ने हिंदी में यथार्थवाद की शुरूआत की। भारतीय साहित्य का बहुत-सा विमर्श जो बाद में प्रमुखता से उभरा चाहे वह दलित साहित्य हो या नारी साहित्य, उसकी जड़ें कहीं गहरे प्रेमचंद के साहित्य में दिखाई देती हैं। प्रेमचंद के लेख पहली रचना के अनुसार उनकी पहली रचना अपने मामा पर लिखा व्यंग्य थी, जो अब अनुपलब्ध है। उनका पहला उपलब्ध रचना उनका उर्दू उपन्यास 'असरारे मआबिद' है। प्रेमचंद का दूसरा उपन्यास 'हमखुर्मा व हमसवाब' जिसका हिंदी रूपांतरण 'प्रेमा' नाम से 1907 में प्रकाशित हुआ। इसके बाद प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह सोज़े-वतन नाम से आया जो 1908 में प्रकाशित हुआ। 'प्रेमचंद' नाम से उनकी पहली कहानी बड़े घर की बेटी, ज़माना पत्रिका के दिसम्बर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई। मरणोपरांत उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' नाम से 8 खंडों में प्रकाशित हुईं। कथा सम्राट प्रेमचन्द का कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। यह बात उनके साहित्य में उजागर हुई है। 1921 में उन्होंने महात्मा गांधी के आह्वान पर अपनी नौकरी छोड़ दी। कुछ महीने मर्यादा पत्रिका का संपादन भार संभाला, छह साल तक 'माधुरी' नामक पत्रिका का संपादन किया। 1930 में बनारस से अपना मासिक पत्र 'हंस' शुरू किया और 1932 के आरंभ में 'जागरण' नामक एक साप्ताहिक निकाला। उन्होंने लखनऊ में 1936 में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होंने मोहन दयाराम भवनानी की अजंता सिनेटोन कंपनी में कहानी-लेखक की नौकरी भी की। 1934 में प्रदर्शित मजदूर नामक फिल्म की कथा लिखी और कंट्रेक्ट की साल भर की अवधि पूरी किये बिना ही दो महीने का वेतन छोड़कर बनारस आ गए क्योंकि बंबई का और उससे भी ज़्यादा वहाँ की फिल्मी दुनिया का हवा-पानी उन्हें रास नहीं आया। उन्होंने मूल रूप से हिंदी में 1915 से कहानियां लिखना और 1918 (सेवासदन) से उपन्यास लिखना शुरू किया। प्रेमचंद ने करीब तीन सौ कहानियाँ, लगभग एक दर्जन उपन्यास और कई लेख लिखे। उन्होंने कुछ नाटक भी लिखे और कुछ अनुवाद कार्य भी किया। प्रेमचंद की कई साहित्यिक कृतियों का अंग्रेज़ी, रूसी, जर्मन सहित अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। 'गोदान' उनकी कालजयी रचना है। उन्होंने हिंदी और उर्दू में पूरे अधिकार से लिखा। उनकी अधिकांश रचनाएं मूल रूप से उर्दू में लिखी गई हैं लेकिन उनका प्रकाशन हिंदी में पहले हुआ। तैंतीस वर्षों के रचनात्मक जीवन में वे साहित्य की ऐसी विरासत सौंप गए जो गुणों की दृष्टि से अमूल्य है और आकार की दृष्टि से असीमीत।

बहुमुखी प्रतिभा संपन्न प्रेमचंद ने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की। प्रमुखतया उनकी ख्याति कथाकार के तौर पर हुई और अपने जीवन काल में ही वे 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से सम्मानित हुए। उन्होंने कुल 15 उपन्यास, 300 से कुछ अधिक कहानियाँ, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल-पुस्तकें तथा हजारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की लेकिन जो यश और प्रतिष्ठा उन्हें उपन्यास और कहानियों से प्राप्त हुई, वह अन्य विधाओं से प्राप्त न हो सकी।

सेवासदन 1918, प्रेमाश्रम 1922, रंगभूमि 1925, निर्मला 1925, कायाकल्प 1927, गबन 1928, कर्मभूमि 1932 और गोदान 1936 प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास है।

डॉ. कमलकिशोर गोयनका ने प्रेमचंद की संपूर्ण हिंदी-उर्दू कहानी को 'प्रेमचंद कहानी रचनावली' नाम से प्रकाशित कराया है। उनके अनुसार प्रेमचंद ने कुल 301 कहानियाँ लिखी हैं डॉ. गोयनका के अनुसार कानपुर से निकलने वाली उर्दू मासिक पत्रिका ज़माना के अप्रैल अंक में प्रकाशित सांसारिक प्रेम और देश-प्रेम (इश्के दुनिया और हुब्बे वतन) वास्तव में उनकी पहली प्रकाशित कहानी है। उनकी कहानियों में विषय और शिल्प की विविधता है। उन्होंने मनुष्य के सभी वर्गों से लेकर पशु-पक्षियों तक को अपनी कहानियों में मुख्य पात्र बनाया है। उनकी कहानियों में किसानों, मजदूरों, स्त्रियों, दलितों, आदि की समस्याएं गंभीरता से चित्रित हुई हैं। उन्होंने समाजसुधार, देशप्रेम, स्वाधीनता संग्राम आदि से संबंधित कहानियाँ लिखी हैं। उनकी ऐतिहासिक कहानियाँ तथा प्रेम संबंधी कहानियाँ भी काफी लोकप्रिय हुईं। प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों में ये नाम लिये जा सकते हैं- 'पंच परमेश्वर', 'गुल्ली डंडा', 'दो बैलों की कथा', 'ईदगाह', 'बड़े भाई साहब', 'पूस की रात', 'कफन', 'ठाकुर का कुआँ', 'सद्गति', 'बूढ़ी काकी', 'तावान', 'विध्वंस', 'दूध का दाम', 'मंत्र' आदि। प्रेमचंद जी की लोकप्रिय कहानियाँ है-

प्रेमचंद ने संग्राम (1923), कर्बला (1924) और प्रेम की वेदी (1933) नाटकों की रचना भी की। ये नाटक शिल्प और संवेदना के स्तर पर अच्छे हैं लेकिन उनकी कहानियों और उपन्यासों ने इतनी ऊँचाई प्राप्त कर ली थी कि नाटक के क्षेत्र में प्रेमचंद को कोई खास सफलता नहीं मिली। ये नाटक वस्तुतः संवादात्मक उपन्यास ही बन गए हैं।

सरल साधना/जन्मशती प्रणाम

सरल जी का रचना संसार

चटगाँव का सूर्य - यह सरल जी की 47 वीं पुस्तक है। सन् 1981 में प्रकाशित यह उपन्यास बंगाल के महान क्रान्तिकारी सूर्यसेन, (जो मास्टर दा के नाम से भी विख्यात थे) जीवन पर लिखा गया है।

बाघा जमीन - यह सरल जी की 48 वीं पुस्तक है। सन् 1982 में प्रकाशित यह बंगाल के क्रान्तिवीर ज्योतिन्द्रनाथ मुखर्जी के जीवन पर आधारित है। किशोरावस्था में कदम रखने के पूर्व ही ज्योतीन्द्रनाथ मुखर्जी का एक बार जंगल में एक खूंखार बाघा से सामना हो गया था। बहुत देर तक संघर्ष करने के बाद अपनी खुखरी से उन्होंने उस बाघ को मार गिराया। तब से ही वे बाघा जतीन के नाम से विख्यात हो गए। वे अंग्रेजों के साथ एक मुठभेड़ में गंभीर रूप से घायल होने के बाद शहीद हो गए थे। अंग्रेज पुलिस अधिकारी टैगार्ट ने भी इस क्रान्तिकारी की शहादत के बाद उनकी बहादुरी की खुलकर प्रशंसा की थी।

चन्द्रशेखर आजाद - यह सरल जी की 49 वीं पुस्तक है। सन् 1982 में प्रकाशित यह उपन्यास भारतीय क्रान्तिकारी दल के महान योद्धा चन्द्रशेखर आजाद के जीवन व कार्यों को आधार बनाकर लिखा गया है।

कूद पड़ीं थीं स्वतंत्रता संग्राम में

कमला नेहरू दिल्ली के प्रमुख व्यापारी पं. जवाहरलाल और राजपति कौल की बेटी थीं। एक भारतीय परंपरागत कश्मीरी ब्राह्मण परिवार में कमला का जन्म 1 अगस्त 1899 को दिल्ली में हुआ था। कमला कौल के दो छोटे भाई और एक छोटी बहन थी जिनके नाम मश चंदबहादुर कौल, कैलाशनाथ कौल और स्वरूप काट्जू थे।

कमला नेहरू जयन्ती/1 अगस्त

कमला कौल का सत्रह साल की छोटी सी उम्र में ही विवाह 8 फ़रवरी 1916 को जवाहरलाल नेहरू से हो गया था। ब्रिटिश लेखिका कैथरिन फ्रैंसक ने अपनी पुस्तक 'इंदिरा- द लाइफ ऑफ इंदिरा नेहरू गांधी' में लिखा है कि दिल्ली के परंपरावादी हिंदू ब्राह्मण परिवार से सम्बंध रखने के कारण हिंदू संस्कार कमला नेहरू के चरित्र का एक प्रमुख हिस्सा थे लेकिन पश्चिमी परिवेश वाले नेहरू ख़ानदान में उन्हें एकदम विपरीत माहौल मिला, जिसमें वह खुद को अलग-थलग महसूस करती रहीं।

उनकी बेटी तथा देश की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के जीवन पर पुस्तकें लिखने वाले लेखकों ने अपनी पुस्तकों में इस बात का प्रमुखता से उल्लेख किया है कि कमला नेहरू की धार्मिक भावनाओं को नेहरू ख़ानदान में समझा नहीं गया और वह सदैव उस परिवार में खुद को अजनबी महसूस करती रहीं।

इतना सब होने पर भी कमला नेहरू ने स्वतंत्रता संग्राम में अपने पति जवाहरलाल नेहरू का कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया। नेहरू के राष्ट्रीय आंदोलन में कूदने पर कमला नेहरू को भी अपनी क्षमता दिखाने का अवसर मिला।

19 नवम्बर 1917 को कमला को इन्दिरा के रूप में पुत्री की प्राप्ति हुई, जो आगे चलकर अपने पिता की तरह देश की प्रधानमंत्री और काँग्रेस पार्टी की अध्यक्षा बनीं। नवम्बर 1924 में कमला ने एक पुत्र को भी जन्म दिया, किन्तु जन्म के दो दिन पश्चात ही उसकी मृत्यु हो गयी।

28 फ़रवरी 1936 को स्विटज़रलैंड में कमला नेहरू की बेहद कम उम्र में टीबी से मृत्यु हो गयी। टी. बी. उस समय भयंकर बीमारी मानी जाती थी। उनके पति जवाहरलाल नेहरू उनकी मृत्यु के समय अलमोड़ा जेल से रिहा न होने के कारण उन्हें देखने न आ सके। यह बात नेहरू के दिल में हमेशा खटकती रही।

लफ्जों को रहने दो और ख्वाहिशें बरसती हैं, विभा रे के दो कविता संग्रह

नई किताब

'चलो कभी बैठ/एक दूसरे के साथ/कुछ और न सही/हमारी चुप ही बांट लें/ मौन की ऊंगली को थामे/चल/खुद अपने पार चलें। डॉ. विभा रे का कविता संग्रह 'लफ्जों को रहने दो...' और 'ख्वाहिशें बरसती हैं' एक ऐसी रचानकार से मिलवाता है जो कहने और सुनने के रिश्ते पर शोध करती दिखती हैं। ये आज के समय की कविताएं हैं, जहां अभिव्यक्तियों के साधनों के जंजाल के बीच हर इंसान खुद को अनसुना और अनकहा महसूस कर रहा है। भयानक शोर के इस समय में विभा रे की कविताएं लफ्जों की अहमियत बता रही हैं। उनकी क्षणिकाएं कम शब्दों में इंसान के कहने और सुनने एक खास राजनीति के समय में वे अपने शोध का निष्कर्ष अपनी पंक्तियों में कुछ यूं निकालती हैं-' बस एक था/उसका गुनाह/वह बात सच्ची बोलता था/' रे की पंक्तियां बिना किसी बनावट के अभिव्यक्ति के सच को यूं उघारती हैं- 'संशोधित/अधिशोधित/अधूरा/क्या सच सच रहा?' 'लफ्जों को रहने की कविताओं में एक ताजगी के साथ उदासी भी है। उदासी शोर में अकेले होते इंसान की, जो एक रीतेपन से भरा है और खुद से भी जुदा हो चुका है। विभा लफ्जों और खामोशी के बीच चल रही जंग को देखते हुए कहती हैं कि बोलना किस काम का जब सुनने वाले ही बहरे हो गए हैं। अपने दूसरे कविता संग्रह 'ख्वाहिशें बरसती हैं। में विभा रे दर्द के साज पर पीड़ा की जो आवाज निकालती हैं उसमें कुछ खोने के दुख में कुछ बोने का सुख भी है। इस संग्रह में प्रेम का रूहानी रूप कहता है- 'तू है नहीं पर दिखाई देता है/तू कहता कुछ नहीं पर मुझे सुनाई देता है/' प्रेम में होना और उसमें खोने का सबसे सकारात्मक रूप इन पंक्तियों में दिखता है, 'बीती हुई/बातों से/कुछ भी नहीं ढ़ोया/हर पल नया-नया सब बोया/ अब मुड़कर देखती हूं तो/सुकून है/कोई मलाल नहीं/बस तेरी तिश्नगी है/ और कोई बोझिल ख्याल नहीं/ रे मानती हैं कि जीवन में प्रेम भाव तो सांस जैसा है। वे उस हालात से परेशान हैं जब मुर्दगी को जिंदगी का नाम दे दिया जा रहा है। नियम और कायदों के पहरों के बीच खामोशियां अपनी जुबान बोल ही देती हैं। शक और शिकवों की जालिम चोट से गुफ्तगू कोने में दुबक कर रो लेती है। विभा रे आम बोल-चाल की भाषा में प्रेम का रूहानी सफर तय कर लेती हैं। प्रेम जैसे मुश्किल भाव को साधारण शब्दों के साथ बरतना मुश्किल काम होता है। गहरे विमर्शों का बोझ उठाए बिना विभा का 'हम-तुम' एक नया नरेटिव बनाता है। इन कविताओं में छुपी हुई स्त्री भी है और अदृश्य पुरुष भी। स्त्री हो या पुरुष प्रेम दोनों करते हैं और प्रेम के कुचले जाने का अहसास दोनों महसूसते. हैं। इनकी ज्यादातर कविताएं ऐसी हैं जिनमें स्त्री और पुरुष दोनों अपनी ख्वाहिशें और अपना यथार्थ ढूंढ लेंगे।

अस्वीकार होने से आप और मजबूत बनते हैं-दिशापाटनी

अभिनेत्री दिशा पाटनी ने कहा है कि मेरा अब तक का सबसे बड़ा सपना बॉलीवुड में आ कर काम करना था और भगवान का आशीर्वाद है कि वह पूरा भी हो गया। इसके अलावा ऐसे छुटपुट कई सपने हैं। सच मानिए तो अब जब मेरा सबसे बड़ा सपना पूरा हो गया, तो मुझे किसी और की कोई जरूरत नहीं । एक्टिंग की दुनिया में अपना नाम बनाने का सपना आंखों में लिए मैं बिना किसी को बताए मुंबई आ गई थी, हालांकि वह मेरी सबसे बड़ी गलती भी थी। मैं आज मानती हूं कि मुझे घर से भागकर नहीं आना चाहिए था। घर में बिना किसी को बताए मैं मुबंई तो आ गई थी, लेकिन यहां पर रहूंगी कैसे, यह नहीं सोचा था। जब मैं घर से निकली तब मेरे पास पैसे भी नहीं थे । मैं तो अपनी पढ़ाई छोड़कर आई थी, इसलिए जब मुंबई आई, तो पता चला कि यहां पर रहना कितना मुश्किल है। मैं बिना थके हर रोज आंडिशन देने जाती थी। ये ऑडिशन ज्यादातर टीवी कॉमर्शियल्स के लिए होते थे। मुझ पर दबाव रहता था कि अगर मुझे काम नहीं मिला, तो मैं घर का किराया नही दे पाऊंगी। जिस दिन कोई आडिशन नहीं होता नहीं होता था, मैं उस दिन भी जाती थी, यह सोचकर कि कहीं तो काम मिले। मैं बचपन से ही सिनेमाप्रेमी रही हूँ ,जिसके कारण मैंने अपने कई सपने सजा लिए जो मुंबई आकार टूटते नहीं चले गए।दिशा ने कहा है कि बचपन में रणबीर कपूर मेरे बड़े क्रश थे। मैं रोजाना स्कूल जाते समय उसी रास्ते से निकलती थी,जहां रणबीर के पोस्टर लगे होते थे। उस पोस्टर को तब तक मुड़-मुड़कर देखती थी, जब तक वह आंखों से ओझल ने हो जाए। मुझे लगता था कि मुंबई जाकर उनसे मिलूंगी, लेकिन जो सोचा था वह हुआ नहीं। बड़ी मुश्किल से एक फिल्म में काम मिला। मैं बहुत खुश थी। अभी फिल्म शुरू ही होने वाली थी, लेकिन मुझे रिप्लेस कर दिया। मुझे समझ नहीं आया कि क्या करू, लेकिन मैंने हिम्मत से काम लिया। इस बात से मैंने एक सबक लिया। कि अस्वीकार होने से आप और मजबूत बनते है। जब यह पता चलता है कि आप में कुछ कमी है, तो आप उसे पाने के लिए और मेहनत करने लगते हैं। मैंने भी मेहनत करनी शुरू कर दी। और सबसे पहले अपने अभिनय पर काम किया। मैंने उसे निखारने के लिए क्लासेज से लेकर वर्कशॉप, सभी किए, ताकि जब भी मैं अगली फिल्म के लिए चुनी जाऊं, तो कोई मुझे रिप्लेस करने का कोई मौका ही न ढूंढ पाए। मेरी मेहनत सफल भी हुई और मुझे बॉलीवुड में मेरी मेहनत सफल भी हुई और मुझे बॉलीवुड में मेरी पहली फिल्म मिली। उसी तरह से मेरा एक और सपना हाल ही में सच हुआ, और वह है सुपर स्टार सलमान खान के साथ फिल्म में काम करना। मैं हमेशा से उनकी फैन रही हूं और जब मुझे पता चला कि मैं उनके साथ 'भारत'में काम करने वाली हूं, तो मुझे यकीन ही नहीं हुआ। मैं हमेशा से उनकी फिल्में देखकर सोचती थी कि काश मुझे कभी उनके साथ काम करने का मौका मिलें, लेकिन जब मौका मिला तो मेरे हाथ-पैरकांप गए। उनके साथ स्क्रीन शेयर करना जैसे सौभाग्य की बात हो। उनसे मैंने काफी कुड सिखा है और यह समझी हूं कि अगर आप मेहनत करते रहते है, तो चाहे सपना हो या लक्ष्य सब पूरे होते हैं। हां इसके लिए कई बार जोखिम लेना पड़ता है, अगर मैंने अपने सपने का पूरा करने के लिए जोखिम न उठाया होता तो आज मैं वह न कर रही होती जो मैं कर रही हूं और सपनों की बात सपने में ही रह जाती।

पुलिसवाली मैडम चला रही हैं गरीब बच्चों के लिए पाठशाला

बुलंदशहर। यहां के खुर्जा देहात थाने में कांस्टेबल गुड्डन चौधरी खाली वक्त में बच्चों की मुफ्त पाठशाला चलाने और उन्हें पढ़ाने के कारण चर्चा में हैं। स्थानीय निवासियों के बीच उनके इस काम की काफी सराहना हो रही है। पुलिसवाली मैडम के नाम से पुकारी जाने वाली गुड्डन बच्चों को पढ़ाने के साथ उन्हें अपनी तनख्वाह से किताबें, कापियां भी खरीद कर देती हैं। गुड्डन चौधरी की कक्षा रोजाना शाम छह बजे सड़क किनारे चलती देखी जा सकती है। वे गरीब परिवार के बच्चों को मुफ्त पढ़ाने के अलावा उन्हें सरकारी स्कूलों में दाखिला दिलाने की कोशिश करती हैं। इसके लिए बच्चों का आधार कार्ड बनवाने के लिए उन्होंने कदम उठाना शुरू कर दिए हैं। मूल रूप से हाथरस जिले की रहने वाली गुड्डन चौधरी 2016 में पुलिस सेवा में शामिल हुई थीं। उनकी तैनाती जिले के खुर्जा -देहात थाने में है। गुड्डन चौधरी की कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों राहुल और दीपक ने बताया कि पुलिस वाली मैडम उन्हें पढ़ाने के लिए शाम को छह बजे आती है। इन बच्चों ने बताया कि पुलिस वाली मैडम पढ़ाने के अलावा उन्हें किताबें भी देती है। साथ ही स्कूल में दाखिला दिलाने की कोशिश भी कर रही हैं। एक बच्चे के पिता मोहर सिंह ने बताया कि वह सड़क किनारे झोपड़ी में रहते हैं। परिवार के पास आधार कार्ड या कोई अन्य पहचान पत्र न होने की वजह से उनके बच्चों को स्थानीय स्कूलों में दाखिला नहीं मिल पाया है। ऐसे में गुड्डन उनके बच्चों को मुफ्त में

पढ़ा रही हैं। एक अन्य बच्चे की मां आशा ने कहा है कि पहचान पत्र न होने की वजह से उनके बच्चे स्कूलों की पढ़ाई से वंचित हैं। उन्होंने बताया कि पुलिस सेवा में आने से पहले मथुरा में भी उन्होंने गरीब बच्चों को मुफ्त में शिक्षा दी। उनका कहना है कि गरीब परिवार के बच्चों को मुफ्त में शिक्षा देने का उनका यह मकसद है कि जो मां-बाप पैसे की कमी के चलते अपने बच्चों को पढ़ा नहीं पाते हैं, वे अपने बच्चों को पढ़ाएं ताकि इन बच्चों का भविष्य संवर सके और यह बच्चे तरक्की करें। उन्होंने कहा कि वे अपनी तनख्वाह का लगभग तीस फीसद इन बच्चों पर खर्च करती हैं। वे यहां लगभग चार महीने से इन बच्चों को मुफ्त में पढ़ा रही हैं।

उर्सुलावान बनीं योरपीय कमीशन की पहली महिला अध्यक्ष

बुसेल्स। जर्मनी की निवर्तमान रक्षा मंत्री उर्सुला वॉन डेर लेयेन (60) को योरपीय यूनियन (ईयू) की कार्यकारी इकाई योरपीय कमीशन (ईसी) का नया अध्यक्ष चुन लिया गया है। वह इस पद पर काबिज होने पहली महिला हैं। उर्सुला एक नवंबर को अपना पदभार संभोलगी। इससे एक दिन पहले यानी 31 अक्टूबर को ब्रिटेन ईयू से अलग हो सकता है। ऐसे में उनका अध्यक्ष बनना और महत्वपूर्ण है।

शिप्रा को प्रवाहमान बनाना ही मेरा मुख्य ध्येय है-सांसद अनिल फिरोजिया

नानाखेड़ा में दंत चिकित्सक डॉ अल्फि खान के क्लिनिक का शुभारम्भ

उज्जैन। ''शिप्रा को प्रवाहमान बनाना ही मेरा मुख्य ध्येय है और इसके लिए मैंने प्रयास शुरू कर दिए हैं।'' यह बात सांसद अनिल फिरोजिया ने कही। वे नानाखेड़ा पर युवा दंत चिकित्सक डॉ. अल्फि खान के क्लिनिक 'डेंट क्राफ्ट' के उद्घाटन के बाद सुधिजनों से चर्चा कर रहे थे। सांसद फिरोजिया ने बारिश की फुहारों के बीच खुशनुमा माहौल में फीता काटकर डेंटल क्लिनिक का शुभारभ किया। युवा सांसद सुर्ख लाल रंग के कुर्ते में उत्साह से भरे नजर आ रहे थे।

सांसद फिरोजिया ने प्रख्यात साहित्यकार अशोक वक्त, भौतिकशास्त्री डॉ. एस.एन.गुप्ता, उद्योगपति रमेश साबू और शिक्षावेद्, मनोज खत्री से अनोपचारिक चर्चा में, उज्जैन में रोजगार की समस्या के प्रति अपनी गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए उन दिनों को याद किया, जब उज्जैन में कपड़ा मिलें, श्री सिंथेटिक्स, पाईप फेक्ट्री आदि उद्योग हुआ करते थे। सांसद फिरोजिया ने चर्चा में कहा कि उज्जैन में विभिन्न कलाओं और साहित्य के क्षेत्र में अनेक अच्छी प्रतिभाएं हैं और सांस्कृतिक व साहित्यिक गतिविधियां भी निरन्तर होती रहती हैं लेकिन प्रतिभाओं के लिए सुविधाओं और प्रोत्साहन का अंभाव है। सांसद ने कहा कि मैं इस दिशा में भी प्रयास करना चाहता हूं।

दंत चिकित्सक डॉ. अल्फि खान को बधाई और आर्शीवाद देते हुए सांसद ने कहा कि आप प्रतिभावान और उत्साही हैं। क्लिनिक के लिए आपने अच्छा स्थान चुना है। इस क्षेत्र में दंत चिकित्सक की आवश्यकता थी मुझे विश्वास है कि आप इस क्षेत्र की जरूरत पूरा करते हुए अच्छी दंत चिकित्सा उपलब्ध कराएंगी। अतिथियों का स्वागत डॉ. अल्फि खान, ऑक्सफोर्ड जूनियर कॉलेज के प्राचार्य आर.यू.खान और समीदा खान ने किया। इस अवसर पर सुनील खत्री, डॉ. राजेन्द्र जैल, डॉ. संदीप डूंगरवाल, डॉ. राजेन्द्र छजलानी, डॉ. अरूण वर्मा, दिलीप धनवानी, वरूण गुप्ता, डॉ. आशीष परमार, वसु गुप्ता, प्रो. एन.के.गर्ग और डॉ. प्रीति सिंह आदि ने डॉ. अल्फि खान को बधाई और शुभकामना दी। अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ एरिजो से भौतिकशास्त्र में स्नातकोत्तर अध्ययन कर रहे डॉ. अल्फि के भाई अफ्फाक खान ने फ्रान्स से फोन पर अपनी मुबारकबाद दी। डॉ. अल्फि खान ने बताया कि डेंड क्राफ्ट क्लिनिक में निम्नानुसार चिकित्स सुविधाएं उपलब्ध हैं-अल्ट्रासॉनिक मशीन से दाँतों

की सफाई, सभी प्रकार की फिलिंग (चांदी, काम्पोसाईट, जीआईसी), खराब दांतो की नसो का इलाज, सिंगल विजिट रूट कैनॉल ट्रीटमेंट, सभी प्रकार की फिक्स दांत लगाना, फिक्स दांत एवं बत्तीसी लगाना, इन्सटैण्ट एक्स-रे सुविधा, बिना दर्द दांतों एवं जड़ों को निकालना, अक्ल दाड़ की सर्जरी, पासरिया का इलाज, बत्तीसी लगाना टेढ़े-मेढ़े एवं आगे निकले हुए दांतों को तार लगाकर सीधा करना, मुंह ना खुलना, मुंह के जलन, छाले एवं घाव का विशेष इलाज, टूटे हुए जबड़े का सम्पूर्ण इलाज, जबड़े के सिस्ट एवं व्युमर का ऑपरेशन, दांतो का पीलापन दूर करना, बच्चों के दांतो का सम्पूर्ण इलाज, स्माईल डिजाईनिंग व क्रियेशन, मुंख कैंसर का प्राथमिक उपचार आदि।

नाट्यशास्त्र के रचयिता भरत मुनि की प्रतिमा का अनावरण

नई दिल्ली। भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र को दुनिया भर में प्राचीनतम इनसाइक्लो मीडिया ऑफ थियेटर (रंगमंच का विश्वकोष) के रूप में मान्यता प्राप्त है। नाट्य शास्त्र के प्रणेता भरत मुनि की प्रतिमा का अनावरण विगत 16 जुलाई को किया गया। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के 'कला कोश प्रतिष्ठा दिवस समारोह' में संस्कृति एवं पर्यटन राज्यमंत्री (स्वंतत्र प्रभार) प्रहलाद सिंह पटेल द्वारा भरत मुनि की प्रतिमा का अनावरण किया गया।

कलेक्टर ने अपने बंगले में कुपोषित बच्चों को कराया भर्ती

सीधी। कलेक्टर अभिषेक सिंह ने अस्पताल में जगह नहीं मिलने पर अपने बंगले में कुपोषित बच्चों को भर्ती कराकर मिसाल पेश की है। पिछले सप्ताह बुधवार को ब्लड ट्रांसफ्यूजन के लिए जिलेभर से 500 एनीमिक बच्चों को जिला अस्पताल लाया गया। इनमें से करीब 400 को अस्पताल और निजी नर्सिंग होम में भर्ती करा दिया। 100 बच्चों को बेड नहीं मिल पाया। हालात बिगड़ने पर तत्काल सूचना कलेक्टर सिंह को दी गई। वे मौके पर पहुंचे और उन बच्चों को खुद के बंगले पर भिजवाया। साथ ही बच्चों व उनके परिजनों को बैठने-सोने और भोजन पानी की व्यवस्था कराई। इधर अस्पताल में बच्चों की संख्या के हिसाब से प्रबंधन ने दक्ष कर्मचारियों की कमी बताई। इस पर कलेक्टर ने संभागायुक्त से चर्चा कर रीवा से आधा दर्जन टेक्नीशियन बुलवाए। जिले में दस्तक अभियान चल रहा। सोशल मीडिया पर आव्हान के चलते 400 बच्चों का ब्लड ट्रांसफ्यूजन किया जा चुका है। 250 से अधिक लोग रक्तदान करा चुके हैं। कलेक्टर ने कहा एनीमिक बच्चों को जिला अस्पताल पहुंचाने में स्वास्थ्य विभाग के मैदानी अमले ने खासी मेहनत की है। उन्हें किसी भी हालत में बिना ब्लड ट्रांसफ्यूजन के वापस नहीं जाने देना चाहता था। पहले मिश्रा नर्सिंग होम व मानस भवन में व्यवस्था कराई। वहां से भी बच्चे बच गए तो अपने आवास में व्यवस्था करा दी।

मुस्लिम समुदाय ने अमरनाथ यात्रियों के लिए शुरू किया लंगर

जम्मू। सांप्रदायिक सौहार्द और आपसी भाईचारा का संदेश देते हुए मुस्लिम समुदाय के लोगों ने बाबा अमरनाथ यात्रा के श्रद्धालुओं के लिए लंगर शुरू किया - है। वफा फाउंडेशन के बैनर तले मुस्लिम समुदाय ने जम्मू--पठानकोट राष्ट्रीय राजमार्ग पर जम्मू शहर के कुंजवानी चौक में बाबा अमरनाथ यात्रा के लिए आने वाले श्रद्धालुओं में खीर वितरित कर शुक्रवार को इसकी शुरुआत की।

महिलाओं को ज्यादा शिकार बनाता है अल्जाइमर

वॉशिंगटन। भूलने की बीमारी अल्जाइमर को लेकर एक नया अध्ययन किया गया। है।इससे यह जानने में मदद मिल सकती है कि यह बीमारी पुरुषों की तुलना में महिलाओं को क्यों ज्यादा शिकार बनाती है? मस्तिष्क में ताउ नामक प्रोटीन के जमाव को इस रोग का संकेत माना जाता है। इस प्रोटीन के फैलाव के तरीके का इस अध्ययन में विश्लेषण किया गया है। अल्जाइमर्स एसोसिएशन इंटरनेशनल कांफ्रेंस में हाल में पेश किए अध्ययन से पुरुषों और महिलाओं में ताउ प्रोटीन के फैलाव में भिन्नता का पता चला है। महिलाओं के मस्तिष्क में प्रोटीन ज्यादा जमा पाया गया है।

कचरे के ढेर में मिले बच्चे को स्तनपान कराने वाली एसआई को नेशनल आवार्ड

डॉ.आंबेडकर नगर (महु)। नेशनल आइकोनिक पर्सनॉलिटी आवार्ड के लिए म.प्र. से एकमात्र महिला एसआई अनिला पाराशर को चुना गया है। यह अवार्ड 18 अगस्त को दिल्ली के लाजपत भवन में उन्हें दिया जाएगा। दो अगस्त 2010 को इंदौर -महु रोड पर डिसेंट कॉलोनी के पास कचरे के ढेर में दो -तीन दिन की नवजात बच्ची मिली थी। बच्ची को महू के सिविल अस्पताल में उपचार के लिए लाया गया। अस्पताल में जब नवजात बच्ची भूख से बिलख रही थी तो एसआइ अनिला ने अन्य महिलाओं से स्तनपान कराने का निवेदन किया। लेकिन जब कोई तैयार नहीं हुआ तो अनिला ने खुद नवजात को स्तनपान कराया।

अंग्रेजों के दौर जैसी असमानता देश में बढ़ी अमीर-गरीब की खाई

नई दिल्ली। आजादी के पहले जैसी आर्थिक असमानता की स्थिति देश में एक बार फिर से देखने को मिल रही है। जमींदारी और सामंतवादी समय में जिसके पास संपत्ति होती थी, उससे अर्जित आय उनके संपत्ति को और बढ़ाती थी। आजादी के बाद इसमें बदलाव तो आया लेकिन एक बार स्थिति फिर उसी तरह हो रही है। देश में अमीर और अमीर होता जा रहा है। जिन लोगों के पास संपत्ति और पर्याप्त बचत है, वे अन्य लोगों की तुलना में तेजी से अमीर होते जा रहे हैं। यहां दिलचस्प बात यह है कि भारत के उदारीकृत होने के लगभग तीन दशकों में, आय में काफी वृद्धि हुई है इसके साथ ही धनवानों को उतनी ही तेजी से धनवान हाते गए हैं। पूर्व-स्वतंत्रता के समय की तरह 3 ही एक बार फिर से राष्ट्रीय धन-आय अनुपात 600-700 फीसदी के स्तर 7 पर पहुंच गया है।

आंकड़े बताते हैं कि पिछले 20 वर्षों में राष्ट्रीय आय के सापेक्ष राष्ट्रीय संपत्ति में भी तेजी से बढ़ोतरी हुई है। 19 वीं शताब्दी के अंत में जहां संपत्ति के सापेक्ष आय 350-400 फीसदी थी वह 2012 में 550-600 तक पहुंच गई है। भारत ही नहीं चीन, अमरीका, यूरोप में भी आर्थिक विकास की तुलना में संपत्ति बढ़ी है।

वित्तत्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआइ) को सरचार्ज से छूट देने की मांग को खारिज कर दिया है। उन्होंने कहा कि एफपीआइ को सरचार्ज से बचने के लिए कंपनी स्ट्रक्चर अपनाना चाहिए। सरकार की सोच यह है कि अमीरों को समाज और राष्ट्र निर्माण में अधिक योगदान देना चाहिए।

सचिन आई सीसी हॉल ऑफ फम में छटे भारतीय

लंदन। सचिन तेंदुलकर आईसीसी हाल ऑफ फेम में जगह बनाने वाले छटे भारतीय क्रिकेटर बन गए हैं। इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास के 5 साल बाद उन्हें हाल ऑफ फेम में शामिल किया गया है। सचिन ने नवंबर 2013 में संन्यास लिया था। गावस्कर , बेदी, कपिल देव, कुंबले, द्रविड़ यह सम्मान पहले ही पा चुके हैं।

15 साल के पृथु गुप्ता भारत के 64वें ग्रेडमास्टर

नई दिल्ली। दिल्ली के 15 साल के शतर्रज खिलाड़ी पृथु गुप्ता भरत के 64वें ग्रैंडमास्टर बन गए हैं। उन्होंने पुर्तगाल लीग के पांचवे दौर में आईएम लेव यानकेलेविक को हराकर 2500 ईएलओ रेटिंग अंक हासिल किए और इस मुकाम तक पहुंचे। भारत के पहले ग्रैंडमास्टर विश्वनाथन आनंद हैं। उन्होंने 31 साल पहले यह उपलब्धि हासिल की थी। 2018 में 8 खिलाडियों ने यह उपलब्धि हासिल की थी। इस साल अब तक 7 खिलाड़ी ऐसा कर चुके हैं।

यह कला साधना का स्वप्न ही है, जो मुझे निरंतर चरैवेती-चरैवेती की प्रेरणा देता है,

मेरे जीवन में कुछ अच्छे सपने वर्षों तक मुझे दिखते रहे। जब भी कुछ अच्छा होने वाला होता, तब मुझे उस तरह के सपने आते थे। उस सपने में अक्सर मैं देखती कि खूबसूरती घाटी है। बहुत सुंदर हरा-भरा मैदान है। रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। एक साफ पानी वाली नदी कलकल बह रही है। उसका पानी साफ नीला है, पानी के बीच बड़ा-सा रंगीन पत्थर है। उस पर मैं लेटी हुई हूं। मेरे ऊपर से पानी बहता जा रहा है और तरह-तरह की आकृतियां बन रही हैं। मैं मुग्धता से उन्हें देख रही हूं। उस पल में मैं आत्मा को महसूस करती हूं। वह सपना मैंने जब भी देखा, मां भगवती की कृपा से मेरे सपने फलित हुए। मुझे लगता है कि हम इंसानों को सपने में भी कभी किसी का बुरा नहीं सोचना चाहिए। बुरे सपने याद न रहें, तो ठीक है। पर हमारी संस्कृति में तो मान्यता है कि अगर स्वप्न में किसी को मृत देखते हैं, वह भी अच्छा है। कहते हैं कि इससे उस व्यक्ति की आयु बढ़ जाती है। यह अजीब बात लगती है। मुझे मालूम है कि मैं अच्छी हूं। मैंने कभी किसी का कुछ बिगाड़ा नहीं है। मैं यह जानती हूं, इसलिए खुश रहती हूं। मेरे दिल पर किसी तरह का भार नहीं है, क्योंकि हमारे अपने अंदर परिपक्वता, अपरिपक्वता आशाएं-निराशाएं, संघर्ष की ऊहापोह जीवनपर्यंत जारी रहती है।

मुझे याद आता है कि मेरे भरतनाट्यम के गुरूजी का कहना था, कभी भी अतिरंजना नृत्य में नहीं करनी चाहिए। नृत्य करने से पहले कुछ अच्छी चीज ध्यान या कल्पना या विचार में आए, तो उसे लिखना मुझे पंसद है, क्योंकि उसके साथ मेरी जिंदगी और सपनों का संबंध होता है। इस संबंध में मुझे कुछ पंक्तियां याद आती हैं-'इस सराय के बीच मुसाफिर/क्या-क्या तमाशा हो रहा/कोई बजावे, कोई गावे/कोई बैठा रो रहा/कोई लपेटत है सुगंधी/और कोई मैं को ढो रहा/कोई ले-ले राम नाम/तो कोई कांटा बो रहा/हलचल-हलचल हो रहा, हर दिन/'

यानी सपने में या जीवन में जो घटनाएं घट रही हैं, क्या घट रही हैं, उसका भी ध्यान होना चाहिए। इनसे क्या निष्कर्ष निकाला? क्या सार लिया? अपने अंदर से। ऐसी कुछ घटी हो तब न। आपने जीवन में संघर्ष किया हो, तभी तो उसे महसूस करेंगे। जिंदगी का मकसद पहचानने की शक्ति हो, उसे पूरा करने की शक्ति भी जरूरी है। मैंने अपनी जिंदगी में जो सपने देखे, वह पूरे तो हुए ही है, मैंने अपनी कला को पराकाष्ठा पर पहुंचाया। मेरे पास पिछले बयालिस वर्षों से बच्चियां नृत्य सीख रही हैं। उनमें से किसी ने दो साल, किसी ने चौदह, तो किसी ने अठारह साल नृत्य सीखा। एक वाक्य में कहूं, तो चौथी पीढ़ी है, जो मुझसे नृत्य सीख रही है। यह कला साधना का स्वप्न ही तो है, जो मुझे निरंतर 'चरैवेति-चरैवेति', की प्रेरणा देता है और मैं उन सपनों को साकार करने में निरंतर मंद्र गति से जीवन को जीती चली जा रही हूं।

सोनल मानसिंह: अमृत महोत्सव

प्रख्यात नृत्यांगना और नृत्यगुरू सोनल मानसिंह (जन्म 30 अप्रैल, 1944) का यह अमृत महोत्सव वर्ष है। 75 वर्ष की उम्र में भी वे सक्रिय हैं। वे ओडिसी और भरतनाट्यम के साथ ही अन्य भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली में भी दक्ष हैं। सोनल मानसिंह का जन्म मुंबई में हुआ था। उन्होंने चार साल की उम्र में मणिपुरी नृत्य, नागपुर में अपनी बड़ी बहन के साथ सीखना शुरू कर दिया था फिर सात साल की उम्र में उन्होंने पांडानल्लुर स्कूल के विभिन्न गुरूओं से भरतनाट्यम सीखना शुरू किया। उन्होंने बी.ए. संस्कृत में प्रवीण और कोविद के साथ ही एलफिन्स्टन कॉलेज, बॉम्बे से जर्मन साहित्य में(ऑनर्स) डिग्री भी प्राप्त की। 18 साल की उम्र में, अपने परिवार के विरोध के बावजूद, उन्होंने 18 साल की उम्र में, प्रोफेसर अमेरिकी कृष्ण राव और चंद्रभागा देवी से भरतनाट्यम सीखा और बाद में 1965 में गुरु केलूचरण महापात्रा से ओडिसी सीखना शुरू किया। वे पद्मभूषण (1992) से विभूषित हैं।

कन्फ्लुएंस समारोह में नृत्य-संगीत ने किया भावविभोर

रसराज फाउंडेशन द्वारा आयोजित कन्फ्लुएंस समारोह का आगाज युवा नृत्यांगना ज्योतिका जोशी और निवेदिता खोट के युगल नृत्य से हुआ। उन्होंने गुरु वंदना पूजा गुर को कीजिए से नृत्य शुरू किया। फिर, शुद्ध नृत्य ताल अष्टमंगल में पिरोया। इस अंश में उपज में पैर का काम पेश किया। उठान ता थेई थेई थेई... की प्रस्तुति में चक्क र और पलटे का सुदर प्रयोग किया।

छंद युक्त चलन को रचनातक धित धा के बोलों पर पेश किया। तिहाई में आड़े और खड़े पैर का काम प्रस्तुत किया। उनके द्वारा 21 चक्कर का प्रयोग भी सधा रहा। ज्योतिका व निवेदिता ने अपनी प्रस्तुति का समापन गुरु भजन सुमिरन गुरु चरणन का कीजिए से किया। दोनों नृत्यांगनाओं को आपसी तालमेल और - नृत्य संयोजन बेहतर था। उनकी प्रस्तुति और अधिक प्रभावी हो सकती थी, अगर तबले का की आवाज संतुलित होती।

जयपूर घराने के प्रतिष्ठित नर्तक पंडित राजेंद्र गंगानी ने गणेश वंदना से नृत्य आरंभ किया। यह प्रस्तुति रचना चहुं देस पूजे गुरु गणेशपर आधारित थी। उन्होंने छूट की उठान थेई थेई थेई तत् तत् ताके बोल पर पेश किया। इसमें चक्कर का प्रयोग मनोहर था। उन्होंने पंडित कुंदन लाल गंगानी रचित गणेश परण नाचत गणपति धा न धा, चक्रदार तिहाई, थाट को पेश किया। सूरदास की रचना माला तिलक मनोहर बाना पर भाव को पेश किया। इसमें गुरु की महिमा का बखान था। अगले चरण में उन्होंने कथक नृत्य पेश किया। जलतरंग पर मिलिंद तालुंकर ने रचना नटनागर अति सुंदर का वादन व गायन किया। इसपर नर्तक राजेंद्र गंगानी भावों को अभिव्यक्त किया। बाल और किशोर कृष्ण के भावों का विवेचन मर्मस्पशी था। समारोह के दौरान जलतरंग पर मिलिंद तालुंकर ने राग पूरिया धनाश्री में आलाप, जोड़ व झाला बजाया। इसके विस्तार में मध्य व द्रुत लय में दो रचनाओं को पेश किया, जो तीन ताल में निबद्ध थे। कुल मिलाकर यह नव प्रयोग। कलाकारों को जोड़ने का अच्छा प्रयास कहा जा सकता है।

बाल कलाकर शिवलेख का निधन

रायपुर। 'ससुराल सिमर का' सहित कई टीवी सीरियल में काम कर चुके मशहूर बाल कलाकार शिवलेख सिंह की 18 जुलाई को एक सड़क हादसे में मौत हो गई। रायपुर -बिलासपुर नेशनल हाईवे पर देवरी के पास तेज रफ्तार ट्रेलर ने उनकी कार में टक्कर मार दी हादसे में उनके पिता शिवेंद्र सिंह , मां लेखना सिंह और चाचा नवीन सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। जांजगीर -चापा जिले के नरियल गांव के रहने वाले शिवलेख सिंह (15) रायपुर आ रहे थे। शिवलेख ने कोरियो ग्रफार रेमो डिसूजा की आगामी फिल्म में भी एक खास किरदार निभाया है।

गांधी जी के 150 वें जयन्ती वर्ष में तीन दिवसीय संगोष्ठी

उज्जैन। महात्मा गांधी के 150 वें जयन्ती वर्ष में विक्रम विश्वविद्यालय की हिन्दी अध्ययनशाला और गांधी अध्ययन केन्द्र द्वारा तीन दिवसीय शोध संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी का शुभारंभ 19 जुलाई को कुलपति डॉ.बालकृष्ण शर्मा की अध्यक्षता में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. रामकिशोर शर्मा द्वारा किया गया। शुभारम्भ के सारस्वत अतिथि प्रो. विनय कुमार पाठक थे। बीज वक्तव्य संगोष्ठी के संयोजक डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने दिया। संचालन डॉ. जगदीश शर्मा ने किया और डॉ. गीता नायक ने आभार माना। शुभारंभ के बाद आयोजित दो तकनीकी सत्रों में 20 शोधपत्रों का वाचन किया गया। सत्रों की अध्यक्षता प्रो. रामकिशोर शर्मा और डॉ. शिव चौरसिया ने की। सत्रों में डॉ. सत्यकेतु सांकृत, डॉ. हरीश प्रधान, डॉ. जवाहर कर्नावटडॉ. रामचन्द्र ठाकुर, श्री राम दवे, जीवनसिंह ठाकुर डॉ. देवेन्द्र जोशी और डॉ. गीता नायक आदि ने संबोधित किया। संगोष्ठी का विषय था- 'महात्मा गांधी- भाषा, साहित्य एवं लोक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में।' उद्घाटन समारोह में डॉ. देवेन्द्र जोशी की पुस्तक 'सदी के सितारे' का लोकार्पण हुआ जिसमें महात्मा गांधी सहित अनेक विभूतियों पर महत्वपूर्ण लेखों का संग्रह किया गया है।

दूसरे दिन तीन तकनीकी सत्र हुए। जयपुर के प्रो अनिलकुमार जैन ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी कविता में गांधी के जीवन मूल्य और प्रतीकों की व्यापक अभिव्यक्ति हुई है। भारतीय भाषाओं के अनेक उपन्यासों और कहानियों के चरित्र और प्रसंगों पर गांधी जी का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुंबई के संस्थापक डॉ. एम. एल. गुप्ता ने कहा कि गांधी जी ने मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा पर बल दिया। वे शिक्षा को अन्तर्निहित शक्ति के विकास का मूल आधार मानते हैं, जो विदेशी भाषा के माध्यम से संभव नहीं है। डॉ विनायक पांडेय, इंदौर ने कहा कि गांधी जी का चिंतन आतंकवाद और भ्रष्टाचार से मुक्ति की राह दिखाता है। उन्होंने प्राणिमात्र के कल्याण का मार्ग दिखाया है। प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा ने कहा कि तुलसी कृत रामचरितमानस गांधी जी के लिए काव्यादर्श और जीवनादर्श रहा है। उन्होंने तुलसी के आदर्शों के अनुरूप समस्त मनुष्यों से दूसरों के गुणों को अंगीकार करने और दोषों से दूर रहने का आह्वान किया है। डॉ विनय पाठक बिलासपुर, डॉ पूरन सहगल मनासा और डॉ बहादुर सिंह परमार, छतरपुर ने क्रमशः छत्तीसगढ़ी, मालवी और बुंदेली लोक जीवन और साहित्य पर गांधी जी के प्रभाव को अनेक उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया। तकनीकी सत्रों में पच्चीस से अधिक शोध पत्रों की प्रस्तुति हुई। सत्रों की अध्यक्षता डॉ पूरन सहगल, डॉ अनिलकुमार जैन जयपुर एवं डॉ कला जोशी, इंदौर ने की। सत्रों में प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ चन्द्रकुमार जैन राजनांदगांव, डॉ प्रभातकुमार दुबे नागपुर, डॉ पुष्पेंद्र दुबे इंदौर, डॉ सत्यकेतु सांकृत नई दिल्ली, डॉ राकेश ढंड, डॉ शिशिर उपाध्याय बड़वाह, डॉ.सी.एल. शर्मा रतलाम आदि ने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ जगदीश शर्मा, डॉ अजय शर्मा एवं राम सौराष्ट्रीय ने किया।

संगोष्ठी के अवसर पर अस्सी से अधिक देशों के डाक - टिकटों और मुद्राओं में महात्मा गांधी के रूपांकन पर एकाग्र प्रदर्शनी भी संयोजित की गई। प्रदर्शनी का संयोजन वरिष्ठ मुद्राशास्त्री डॉ. आर. सी. ठाकुर एवं डाक टिकट संग्राहक ऋषिराज उपाध्याय द्वारा किया गया। डाक टिकटों के प्रति जागरूकता के लिए डाक विभाग के सौजन्य से विशेष फिलेटली काउंटर भी लगाया गया।

संगोष्ठी में समापन दिवस पर गांधी जी के विश्वव्यापी प्रभाव पर चर्चा के साथ काव्य एवं संगीत के माध्यम से भावांजलि अर्पित की गई। संगोष्ठी में तीसरे दिन चार सत्र हुए। समापन समारोह के मुख्य अतिथि जबलपुर के प्रो त्रिभुवननाथ शुक्ल ने कहा कि महात्मा गांधी के विचार संपूर्ण मानवता के लिए हैं। मनुष्यता से जुड़ा ऐसा कोई पक्ष नहीं है, जिस पर उन्होंने प्रयोग न किया हो। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो.बालकृष्ण शर्मा ने कहा कि महात्मा गांधी सच्चे अर्थों में ऋषि हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो रामकिशोर शर्मा ने कहा कि गांधी जी को मात्र पूजा का प्रतीक न बना कर उन्हें जीवन में उतारने की आवश्यकता है। समय के दबाव में जो परिवर्तन आ रहे हैं, उनके बीच गांधी के दिखाए मार्ग पर चलना अत्यंत आवश्यक है। प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा ने कहा कि मानवीय सभ्यता और संस्कृति से जुड़ा ऐसा कोई पक्ष नहीं है, जिस पर गांधी जी अपनी मौलिकता और दृढ़ता के साथ खड़े न हुए हों। वे राजनीतिक गुलामी से मुक्ति से पहले जरूरी मानते हैं भाषाई गुलामी से मुक्ति। वर्तमान में गांधी जी के अवदान पर अन्तरानुशासनिक दृष्टि से कार्य करने की आवश्यकता है। प्रातः काल तकनीकी सत्र में प्रो. प्रेमलता चुटैल, डॉ.जगदीश चंद्र शर्मा आदि ने विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल ने की। सत्र का संचालन डॉ भेरूलाल मालवीय ने किया।

समापन दिवस पर आठ भाषाओं की कविताओं और संगीत के माध्यम से गांधी जी को भावांजलि अर्पित की गई। 'कविताओं में महात्मा गांधी की अनुगूंज' कार्यक्रम में श्रीराम दवे, डॉ देवेंद्र जोशी (हिंदी), प्रो त्रिभुवननाथ शुक्ल (संस्कृत), डॉ.बी. आर. धापसे औरंगाबाद (मराठी), डॉ. रफीक नागौरी, श्री हमीद गौहर, डॉ विजय सुखवानी (उर्दू), डॉ .शिव चौरसिया (मालवी), डॉ शिशिर उपाध्याय, जयश्री उपाध्याय बड़वाह (निमाड़ी), डॉ. बहादुर सिंह परमार छतरपुर (बुंदेली) और डॉ चंद्रकुमार जैन राजनांदगांव (छत्तीसगढ़ी) ने अपनी सरस रचनाओं के द्वारा गांधी जी के प्रति भावांजलि अर्पित की।

लोक गायक सुंदरलाल मालवीय ने गांधी जी के प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेणे कहिए' और 'अमर हुई गया बापूजी जिनके याद करे संसार' गीत की प्रस्तुति कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। काव्य पाठ का संचालन शिशिर उपाध्याय ने किया।

डॉ. पुरू दाधीच के 80 वें जन्मदिवस पर दो दिवसीय 'अशितिः उत्सव' का आयोजन

इन्दौर। प्रख्यात नृत्यविद् डॉ. पुरू दाधीच के 80 वें जन्मदिन के अवसर पर दो दिवसीय अशितिः उत्सव का आयोजन आनन्द मोहन माथुर सभागृह में किया गया। उत्सव के प्रथम दिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ वरिष्ठ नृत्यांगना शोभना नारायण ने कहा कि वैसे तो कथक की बात पिछले सौ-दो वर्षों से हो रही है लेकिन मौर्यकाल के अभिलेख में भी कथक का उल्लेख मिलता है।

कला समीक्षक मंजरी सिन्हा ने कहा कि देवी सरस्वती के हाथ में पुस्तक शास्त्र की प्रतीक है तो वीणा प्रयोग की । हमें शास्त्र और प्रयोग, दोनों को साथ लेकर ही आगे बढ़ना चाहिए। नृत्यांगना नलिनी ने कहा कि विदेशी संस्कृति को अपनाना गलत नहीं है पर अपनी संस्कृति को केन्द्र में रखकर चलना चाहिए।

डॉ. संध्या पुरेचा ने कहा कि शास्त्र ऐसी गंगा है, जिसके साथ बहते हुए हम पवित्र हो जाते हैं। ध्रुपद केन्द्र की निदेशक कमलिनी ने कहा कि कथक केन्द्र में शोध केन्द्र शुरू करने का निर्णय लिया जा चुका है। शोध केन्द्र में डॉ. दाधीच और अन्य शोधकर्ताओं के अनुसंधान को शामिल किया जाएगा।

अशितिः उत्सव में डॉ. पुरू दाधीच का अभिनन्दन किया गया। उत्सव में नृत्यांगना नलिनी, मंजरी देव, विजय शंकर मिश्र, विशन कुमार और रिद्धि दासानी ने भी अपनी बात कही। इस अवसर पर 'दशावतार' आदि नृत्य प्रस्तुतियां भी की गईं।

आयोजन में डॉ. दाधीच ने दुख जताया कि कथक को घरानों में बांधकर रखा गया है। जबकि घराने तो 100-200 साल पुराने ही हैं, लेकिन कथक तो एक जाति है और इसे बनने में हजारों साल लग जाते है। कथक केवल नाचने तक सीमित नहीं है, यह तो गायन-वादन से संबंधित है। वर्तमान में हम कथक में कई क्रियाएं करते हैं, मगर उनके नाम तक नहीं जानते। इन क्रियाओं में उन्होंने उरभ-तिरभ सुलभ और सच के तीनों प्रकारों को प्रायोगिक रूप से भी बताया। डॉ. दाधीच की शिष्या रिद्धि दस्सानी मिश्रा ने बताया कि कई विषयों की कथक में कोई मुद्रा नहीं थी, जिन्हें गुरूजी ने हमे समझाया जैसे परछाई, दिन-रात का मिलना, सूरज का उगना, सूरज की तेज किरणें, गणेश वंदना में मधुकाकृति आदि। नृत्य साधक डॉ. सुनील सुनकारा ने कथक की एक प्रस्तुति के द्वारा बताया कि गुरू ने कैसे कथक में नायक द्वारा खुद का वर्णन करने की परंपरा को स्थापित किया। उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी की सदस्य डॉ. पूर्णिमा पांडे ने डॉ. दाधीच के जीवन के अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उन्होंने उस दौर में उन लोगों के बीच अपनी पहचाई बनाई, जहां एक घराने के कलाकार दूसरे घराने के कलाकार को अलग मानते थे। ख्यात नर्तक पीयूष राज ने कहा कि आज के स्वार्थी समय में भी डॉ. पुरू दाधीच जैसे गुरू हैं जिन्होंने कथक को पूरी जिंदगी समर्पित कर दी। उनकी लिखी करीब एक दर्जन किताबें नई पीढ़ी के कथक कलाकारों का मार्गदर्शन कर रही हैं और आगे भी करती रहेंगी। नृत्य सिखाने के साथ वे नई पीढ़ी के लिए एक से बढ़कर एक नई बंदिशें भी रच रहे हैं और उन्हें रिकॉर्ड कर शिष्यों तक पहुंचा भी रहे हैं। मैं जब से डॉ. दाधीच से जुड़ा हूं, उनकी धैर्य क्षमता का कायल हो गया हूं। वे जिस तरह से पूरे इत्मीनान के साथ कथक सिखाते है वैसे इस दौर में संभवतः और कोई बड़ा गुरू नहीं सिखा रहा हैं। सीखने के दौरान हम गलतियों पर गलतियां दोहराते जाते हैं लेकिन वे कभी न तो झुंझलाते हैं, ना ही फटकारते हैं। दसियों बार पूछने के बावजूद वे बहुत धैर्य से हमें समझाते हैं और छोटे-छोटे पोज दुरुस्त कराते हैं। उनके अलावा इस दौर के दूसरे गुरूओं ने खुद सिखाने के बजाय अपने सहायकों से कथक सिखाने का चलन अपना लिया है।

बच्चों को सही शिक्षा मिले और शिक्षक अपना कार्य समय पर करे- आर.के.उपाध्याय

उज्जैन। संयुक्त संचालकशिक्षा आर.के. उपाध्याय ने सा.विक्रान्त भैरव दर्शन के सम्पादक विपुल जोशी से चर्चा में बताया कि वैसे तो सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशानुसार शिक्षकों को दूसरे कामों में नहीं लगाया जा सकता पर यदि शासन से ऐसे निर्देश मिलते हैं तो उनका पालन तो करना ही होता है।

उज्जैन के स्कूलों में जर्जर और खराब भवनों के बारे में उपाध्याय ने कहा जिन भवनों की हालत ठीक नहीं है वहां पर कक्षाए नहीं लगाने के निर्देश दे दिए गए हैं।

उपाध्याय ने बतलाया कि उन्होंनं एम.एस.सी (बॉटनी), एम.एड की उपाधि प्राप्त की है। साढ़े चार वर्ष खण्डवा में रहे फिर उज्जैन संभाग के कालापीपल में एक वर्ष प्राचार्य के पद पर रहे और छः वर्ष तक सहायक संचालक के पद पर शाजापुर में रहे। उज्जैन में अपनी प्राथमिकता के प्रश्न पर उन्होंने कहा कि

बच्चों को सही शिक्षा मिले और शिक्षक अपना कार्य समय पर करते हुए अपना ध्यान विद्यार्थियों पर केन्द्रित रखें, यही मेरी प्राथमिकता है।

अर्पण, तर्पण के साथ समर्पण भी बहुत आवश्यक-प्रो. जड्डीपाल

उज्जैन। 'दर्शन वांग्मय के अनुसार यदि कार्य का प्रयोजन नहीं बताया जाए तो व्यक्ति कार्य में प्रवृत्त नहीं होता। केवल धन मात्र लक्ष्मी का अर्थ नहीं है बल्कि कांति और सौंदर्य भी लक्ष्मी है। युद्ध या संघर्ष से वास्तविक समृद्धि नहीं मिलती। अर्पण एवं तर्पण के साथ समर्पण भी जीवन में आवश्यक है।' महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान की ओर से शनिवार को भरतपुरी में आयोजित वैदिक व्याख्यान सत्र में यह बात प्रतिष्ठान के सचिव प्रो. वीरूपाक्ष वी. जडड्डीपाल ने मुख्य वक्ता के रूप में कही। उन्होंने कहा कि व्यापक-सकारात्मक सोच व चिंतन में जीवन का मर्म निहित है। जीवन स्वयं में एक मंत्र है। मनुष्य समूचे विराट में अपने समग्र अस्तित्व को पहचाने। अपने देवत्व की अनूभूति करना ही मनुष्य का लक्ष्य है। शुद्ध शहद एवं जल में औषधीय तत्व है, यह सर्वप्रथम भारतीयों ने पहचाना। शहद की प्रकृति शरीर को शुद्ध करने की है। लक्ष्मी स्वयं तृप्त है, दूसरों को भी तृप्त करती है। प्रो. जडड्डीपाल ने अक्षरों के रहस्य बताकर चिकली सहित लक्ष्मी के चार पुत्रों की सांकेतिक व्याख्या भी प्रस्तुत की। सूत्रधार कुंजबिहारी पांडे थे।

फोटोग्राफर उमेश जोशी का निधन

उज्जैन। विक्रम विश्वविद्यालय के सेवानिवृत फोटोग्राफर उमेश जोशी का 18 जुलाई को निधन हो गया।

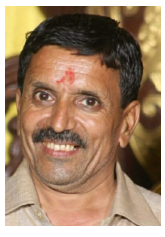

लंबे समय तक उन्होंने विश्वविद्यालय के विभिन्न आयोजिनों में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाईं थी। जोशी दो वर्ष वर्ष पहले ही सेवानिवृत्त हुए थे। पिछले काफी समय से वे गंभीर बीमारी से जूझ रहे थे। शुक्रवार को उनका अंतिम संस्कार किया गया।

युवा किसान को राष्ट्रीय पुरस्कार

उज्जैन। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का 91वां स्थापना दिवस समारोह दिल्ली में मना। इसमें उज्जैन जिले के ग्राम पिपलियाहामा तहसील बट्टिया के युवा किसान अश्विनीसिंह चौहान को बाबू जगजीवनराम अभिनव कृषि पुरस्कार से सम्मानित किया गया। चौहान को पुरस्कार के अतंर्गत प्रशस्ति पत्र एवं 50 हजार रूपए नकद दिये। कृषि विज्ञान केंद्र उज्जैन के कृषि वैज्ञानिक दिवाकरसिंह तौमर व डॉ. आरपी शर्मा बताया कि चौहान 10 वर्षो से कृषि क्षेत्र में विभिन्न नवाचार कर रहे है।

साप्ताहिक विक्रान्त भैरव दर्शन

प्रधान सम्पादक
राजेन्द्र जोशी

सम्पादक
विपुल जोशी

कार्यकारी सम्पादक
डॉ.पांखुरी वक्त जोशी

सम्पादकीय सलाहकार
डॉ. रमेश आर्य
डॉ.देवेन्द्र जोशी

सहसम्पादक
मनोज राठौर

विधि परामर्शदाता
प्रणव गर्ग

ब्योरो प्रमुख
नंदिनी शर्मा-दिल्ली
उत्सव वक्त-मुम्बई
दीप्ति जोशी व्यास-बंगलूरू
अमरेश शर्मा-भोपाल
डॉ.विनायक करूण-इन्दौर

सहायक
शिवानी पाटीदार
रूबी खान

संस्थापक/समन्वयक
अशोक वक्त

स्वत्वाधिकारी, स्वामी, संपादक, प्रकाशक - विपुल जोशी, 7, चंद का कुआं, उज्जैन से प्रकाशित एवं मेहरजान प्रिंटिंग प्रेस, कमरी मार्ग, उज्जैन से मुद्रित। प्रधान सम्पादक - राजेन्द्र जोशी, फोन 0734-2552323, 9425380265 (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र उज्जैन है।) ई-मेल : vikrantbhairavdarshan@rediffmail.com